


# पञ्चाङ्गुली अनुष्ठान

पञ्चाङ्गुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥

ॐ

# दो शब्द

दिव्य दृष्टि प्राप्त करने की अद्भुत साधना जब दृष्टि प्रभाव से भूत-भविष्य, वर्तमान का ज्ञान हो जाता है। पंचांगुली साधना केवल पांच अंगुलियों और हस्तरेखा सिद्ध करने की साधना नहीं है। पंचांगुली देवी वह शक्ति है, जो साधक के भीतर एक चैतन्य शक्ति जाग्रत करती है, साधक अपने आप में जानकार होता हुआ स्वयं के साथ-साथ, दूसरों के बारे में भी जान सकता है पंचांगुली मूलतः सम्मोहन की साधना है। भविष्य के अज्ञात रहस्यों को जानने वाली यह विद्या है, जिसे प्रत्येक ऋषि ने सिद्धि किया था। इस विद्या के प्रमुख प्रवर्तक-अंगिरस, कणाद और अत्रेय थे। आज के युग में भी इस साधना को सम्पन्न कर सिद्ध किया जा सकता है। पूज्य सद्गुरुदेव ने अपनी पुस्तक हस्तरेखा और पंचांगुली विज्ञान में इस रहस्य को स्पष्ट किया हैं।

मनुष्य स्वभावतः इसी बात के लिए उत्सुक रहता है, कि वह अपने भविष्य को जान सकें। अनेकों रहस्यमय प्रश्न उसके मन में उठते रहते हैं -क्या ऐसी कोई शक्ति ब्रह्माण्ड में है, जिसका सम्बन्ध हमसे स्थापित हो? क्या ऐसी कोई युक्ति है, जिसके माध्यम से हम अपना भूत, भविष्य और वर्तमान स्पष्ट रूप से देख सकें? ऐसे अनेकों प्रश्न उसके मानस पटल पर अंकुरित होते रहते है।

आज ऐसी कई पद्धतियां बन चुकी हैं, जिनके द्वारा अपने अतीत और भविष्य का आंकलन किया जा सकता है हस्त रेखा विज्ञान, नेपोलियन थ्योरी, फलित ज्योतिष, टेरो आदि-आदि। इनमें से सबसे ज्यादा प्रचलित विधि है ' हस्त रेखा विज्ञान', जिसके माध्यम से हाथ की लकीरों का, जो देखने में तो कुछ लाइनें ही दिखाई देती हैं, किन्तु सैकड़ों सूक्ष्म तन्तुओं को अपने अन्दर समेटे रहती हैं, जिनका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन एक अच्छा हस्त विशेषज्ञ ही कर सकता है।

संसार में जितने भी पुरुष या स्त्रियां हैं, उनके हाथों की लकीरें कभी एक जैसी नहीं होतीं और उन लकीरों में ही उनका भूत, भविष्य और वर्तमान छिपा होता है, आवश्यकता होती है उस शक्ति के माध्यम से, उन सूक्ष्म रेखाओं को पढ़कर ब्रह्माण्ड से सम्पर्क स्थापित करने की, क्योंकि जब तक ब्रह्माण्ड में व्याप्त अणुओं से हमारी आत्म-शक्ति का सम्बन्ध नहीं होगा, तब तक हम कालज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते... तभी हमें पहले की, अब की और आने वाले समय की घटनाओं का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

मंत्र और यंत्र ही ऐसी दो अक्षय निधियां हैं, जिनके माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है और सुखी, सफ़ल एवं सम्पन्नता युक्त जीवनयापन किया जा सकता है। सभी की उत्सुकता का केन्द्र 'भविष्य' का ज्ञान अर्जित करने के लिए **"पंचांगुली साधना"** सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जिसके माध्यम से अपने या किसी भी व्यक्ति के भूत,

भविष्य और वर्तमान को आसानी से जाना जा सकता है। पंचांगुली देवी **कालज्ञान** की देवी हैं, जिनकी साधना कर साधक होने वली घटनाओं व दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है तथा इसी साधना के द्वारा हस्त विज्ञान में पारंगत हुआ जा सकता है और भविष्यवक्ता बना जा सकता है।

मुख्यरूपसे आत्मज्ञान को सिद्ध करना ही जीवन की श्रेष्ठता और लक्ष्य भी है, उसमें पंचांगुली साधना किञ्चित् व्यावहारिकरीत्या सहयोग दे सकता है। जैसे-घटित होने वाली दुर्घटनाओं की पूर्व जानकारी देकर उन्हें सावधान कर सकता है। पंचांगुली साधना के माध्यम से सामने वाले को देखकर उसका भविष्य पूर्णरूप से ज्ञान हो जाता है, वह स्वयं भी जीवन की रक्षा आप कर सकता है, किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को अक्षरशः जान सकता है। किसी भी साधना को करने से पूर्व इस साधना को अवश्य ही कर लेना चाहिए, जिससे कि साधना के अन्तर्गत रह गई त्रुटियों और आने वाली अड़चनों को सुगमता से दूर किया जा सके।

श्री पंचांगुली देवी **'काल ज्ञानेश्वरी'** हैं,इनकी साधनासे भविष्य ज्ञान सिद्ध होजाता है। पंचांगुली साधना सौम्य साधना है, जो कि कल्याणकारी होने के साथ-साथ भविष्य कथन में भी अपूर्व सिद्धि प्रदायक होती है। भारतीय मंत्र साधना में उसकी आस्था दृढ़ हुई है।

पञ्चाङ्गुली देवी का स्थान अपने हस्त में माना गया है, अतः इसकी उपासना हस्त नक्षत्र से ही आरंभ करनी चाहिये। कार्तिक मास के हस्त नक्षत्र से साधना प्रारंभ कर मार्गशीर्ष के हस्तनक्षत्र तक करें। एक माला प्रतिदिन करें। हवनादि कर कन्या भोजन करायें। जप शुरु करते समय पंचमेवा की दस आहुति अवश्य देवे।

हाथ की पांच अंगुलियों का प्रतीक देवी का चित्र बनाकर पट्टे पर रखें। देवी का स्थान हाथ के मध्य में है। उसके पैर हाथ की मणिबंध रेखा को स्पर्श करते हैं तथा हृदय रेखा के समीप मुखमण्डल है एव देवी का मुकुट मध्यमा अंगुली के प्रथम पौर को स्पर्श कर रही है।

पंचांगुली देवी कालज्ञान की देवी हैं, जिनकी साधना कर साधक को होने वाली घटनाओं व दुर्घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है तथा इसी साधना के द्वारा हस्त विज्ञान में पारंगत हुआ जा सकता है और भविष्यवक्ता बना जा सकता है। प्राचीन काल के योगी, साधु, संन्यासी इस साधना को सिद्ध कर लोगों को भविष्य के बारे में बताया करते थे और यश, कीर्ति, वैभव सब कुछ प्राप्त कर लेते थे। धीरे-धीरे कुछ लोगों की चालाकी और कायरता की वजह से, जो ये समझते थे कि यदि किसी को या सभी लोगों को इस साधना की पूर्ण जानकारी हो गई, तो हमें कौन पूछेगा? इसलिए यह ज्ञान एक छोटे से दायरे में ही

सिमट कर रह गया। समय ने पलटा खाया और बहुत बड़ा जन समुदाय इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हो गया, जिसके कारण इस साधना का प्रचार-प्रसार होने लगा, जो उन ढोंगी साधु-संतों पर एक तीव्र प्रहार ही था, क्योंकि वे इस विद्या का लाभ उठाकर, दूसरों को आसानी से मूर्ख बनाकर उन्हें अपने अधीन कर लेते थे। इस साधना को सम्पन्न कर ऐसे ढोंगियों पाखण्डियों का पर्दाफाश कर, स्वयं के साथ-साथ समाज का भी कल्याण किया जा सकता है।

पंचांगुली साधना के माध्यम से सामने वाले को देखकर उसका भविष्य पूर्णरूप से ज्ञात हो जाता है, वह स्वयं भी अपने आपात्कालीन संकटों का पूर्वाभास कर अपने जीवन की रक्षा आप कर सकता है, किसी भी व्यक्ति के भविष्य के प्रत्येक क्षण को अक्षरशः जान सकता है, और घटित होने वाली दुर्घटनाओं की पूर्व जानकारी देकर उन्हें सावधान कर सकता है।

इस साधना को सिद्ध करना जीवन की श्रेष्ठता है तथा किसी भी साधना को करने से पूर्व इस साधना को अवश्य ही कर लेना चाहिए, जिससे कि साधना के अन्तर्गत रह गई त्रुटियों और आने वाली अड़चनों को सुगमता से दूर किया जा सके।

महाभारत युद्ध में धृतराष्ट्र नेत्रहीन होने की वजह से उस युद्ध को नहीं देख सकते थे, किन्तु संजय की दिव्य दृष्टि ने उन्हें कौरवों और पांडवों के बीच हुए युद्ध का अक्षरशः विवरण कह सुनाया। लोग उसे दिव्य दृष्टि का ज्ञान कहते थे, किन्तु वास्तव में कुछ भी देख लेने की शक्ति उस दृष्टि के माध्यम से नहीं, अपितु उस शक्ति के माध्यम से प्राप्त हुई थी, जिसे उन्होंने साधना के बल पर प्राप्त किया था, क्योंकि मात्र दृष्टि के माध्यम से भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त होना कठिन-सी प्रक्रिया है, ज्ञान तो चैतन्य शक्ति के माध्यम से ही प्राप्त होता है, जिसे अपने अन्दर से प्रस्फुटित करना पड़ता है। यदि पंचांगुली मंत्र के साथ-साथ काल ज्ञान मंत्र को भी सिद्ध कर लिया जाय, तो संजय के समान ही दिव्य दृष्टि प्राप्त की जा सकती है, फिर यह जरूरी नहीं, कि जिस व्यक्ति का भूत-भविष्य जानना हो, वह सामने हो ही। पंचांगुली साधना की उच्चतम स्थिति दिव्य दृष्टि सम्पन्न होना है। यहां प्रस्तुत वर्णन 'पंचांगुली साधना' की उसी भावभूमि को अपने में समेटे हुए है।

मंत्र:-

**ईं॥ ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषिणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गरुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट**

**मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जडावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा॥ ईं॥**

देवी के आठ हाथ हैं दाहिनी ओर आशीर्वाद मुद्रा, रस्सी (पाश) खड्ग एवं तीर है तथा बायीं ओर हाथों में पुस्तक, घण्टा, त्रिशूल एवं धनुष धारण किये हुये है।

आशा करते हैं कि साधकगण इस पंचांगुली उपासना द्वारा स्वयं सिद्धि को प्राप्त कर, अपने और दूसरों की हितमें सहयोग देवै।

ॐ तत्सत् ॐ

# विषय सूची


| | |
|---|---|
| दो शब्द | II |
| ऋष्यादि न्यास का तात्पर्य | १ |
| समय विचार | ७ |
| सामग्री | ८ |
| ज्ञातव्य | ८ |
| जपकाल के नियम | ९ |
| शोधन | ९ |
| पंचांगुली मन्त्रः<br>१० | |
| पंचांगुली यन्त्रः, ध्यान, न्यासादि | ११ |
| सङ्कल्प | १२ |
| यन्त्र पूजा | १३ |
| आवरण पूजन | १६ |
| प्राण प्रतिष्ठा | २७ |
| कालज्ञान मन्त्र | ३१ |
| कलश पूजा | ३३ |
| पुण्याह वाचन | ३३ |
| तन्त्रान्तरे पंचांगुली कल्पम् | ३८ |
| मीनाक्षी पञ्चरत्नम् | ४६ |
| देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् | ४६ |
| भवान्यष्टकम् | ४८ |

ॐ

# पञ्चाङ्गुली अनुष्ठान

प्रत्येक तंत्र-मंत्र में निम्न तत्त्व भी ध्यान में रखने चाहिए—

1. ऋषि-प्रत्येक मंत्र का एक ऋषि होता है। जिसने उसकी रचना की है।

2. छन्द-प्रत्येक मंत्र विशेष छन्दोमय होता है।

3. देवता-प्रत्येक मंत्र का एक देवता होता है।

4. बीज-बीज वह है, जिससे मंत्र का उदय हो।

5. शक्ति-शक्ति वह है, जो साधक को निर्दिष्ट ध्येय तक पहुंचाने में उसे बल प्रदान करे।

6. कीलक-कीलक वह कहलाता है, जो इस शक्ति को लक्ष्य तक पहुंचाने में साधक को दृढ़ रखे।

7. प्रयोजन-जिस कार्य के लिए यह किया जाता है।

## विशेष

करन्यासों के अंत में 'नमः ' शब्द आता है। हृदयादिन्यास के अंत में 'नमः ' शब्द ही आता है, पर सिर के सम्बन्ध में 'स्वाहा', शिखा के सम्बन्ध में 'वषट्', कवच के सम्बन्ध में 'हुम्', नेत्र के सम्बन्ध में 'वौषट्' और अस्त्र के सम्बन्ध में 'फट्' शब्द आता है।

ये सब गुप्त रहस्यपूर्ण शब्द हैं, जो इन कार्यों के लिए विशेष रूप से नियुक्त हैं। इन सब मुद्रा चेष्टाओं का रहस्य है, कि सम्बन्धित साधना के दौरान शरीर को सब ओर से मंत्रमय सुरक्षित कर देना, जिससे कि लक्ष्य तक पहुंचा जा सके।

### ऋष्यादि न्यासः

‘न्यास' का अर्थ ‘रखना या प्रतिष्ठित करना' है। साधक द्वारा अपने बाह्य तथा अन्तः शरीर में विभिन्न देवताओं की प्रतिष्ठा करके शरीर को देवमय बनाने की क्रिया का नाम न्यास है। न्यासविधि के द्वारा साधक अपने को सामान्य मानवीय भूमिका से ऊपर उठाकर अपने गुरु तथा इष्ट देवता के साथ तादात्म्यावस्था को प्राप्त करने का प्रयास करता है। साधना में **'देवो भूत्वा देवानप्येति'** का मूलमन्त्र काम आता है। तात्पर्य यह कि यदि गुरु और इष्ट की कृपा प्राप्त करनी है, तो सामान्य मानवीय प्रकृति से ऊपर उठकर गुरु तथा देवतामय बनना पड़ता है, **'ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेद विभागिने'** अर्थात् स्वयंमें, गुरु तथा ईश्वरमें केवल बाह्यभेद मानकर
परमार्थतः अभेद-भावना करनी होती है।

न्यास ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, मातृकान्यास, सृष्टि न्यास, संहारन्यास आदि कई प्रकार के होते हैं। ऋष्यादिन्यास में मन्त्र के ऋषि, छन्दस्, देवता, बीज, शक्ति तथा

कीलक नामक छह अंग होते हैं। इनमें से प्रत्येक के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग करते हुए क्रमशः नमः स्वाहा, वषट्, हुं, वौषट् तथा फट् पदों के साथ सिर, मुख, हृदय, गुदा, चरण तथा नाभि में न्यास किया जाता है। जैसे, भगवती दुर्गा के महामन्त्र **'ओं ह्रीं दुं दुर्गायै नमः'** के ऋषि नारद, छन्दस् गायत्री, देवता दुर्गा, बीज दुं तथा शक्ति ह्रीं है। इस मन्त्र की साधना में ऋष्यादिन्यास निम्न प्रकार से किये जाने का
विधान है—

नारदाय ऋषये नमः (सिर में),
गायत्री छन्दसे नमः (मुख में),
दुर्गादेवतायै नमः (हृदय में),
दुं बीजाय नमः (गुह्य अंग में),
ह्रीं शक्तये नमः (चरणों में)

## ऋष्यादिन्यास का तात्पर्य

### ऋषि

आचार्य शंकरने ऋषि,छन्दस् तथा देवताआदिकी निरुक्ति अपने ही ढंगसे की है।उनके अनुसार साधक जिस मन्त्रकी साधना कररहा है, उस मन्त्र का प्रथम साक्षात्कार करने वाला महान् साधक उस मन्त्र का **'ऋषि'** कहलाता है। जैसे गायत्री महामन्त्र के ऋषि महर्षि विश्वामित्र हैं । मन्त्र की साधना में मन्त्र का सर्वप्रथम साक्षात्कार करने वाला 'ऋषि' सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिये मन्त्र - साधना में सबसे पहले ऋषि का ही स्मरण करके उसे शरीर में सर्वोच्च स्थान पर न्यस्त या स्थापित किया जाता है ।

**ऋषिर्गुरुत्वाच्छिरसैव धार्यः छन्दोक्षरत्वाद्रसनागतं स्यात्।**
**धियाऽवगन्तव्यतया सदैव हृदि प्रदिष्टा मनुदेवता च॥**

(प्रपञ्चसारः ६/२)

'ऋषि' शब्दका निर्माण गति अर्थवाले धातु'ऋ गतौ'तथा प्राप्ति अर्थ वाली धातु 'षिङ् प्रापणे'से होता है। शिष्य को गतिशील बना कर जो उसे 'स्वस्वरूप परमात्मन्' तक ले जाता है, वह गुरु है। गुरु सर्वोच्च है, अतः गुरु ही 'ऋषि' है। साधना में ऋषि को अपने शरीर के सर्वोच्च स्थान 'सिर' पर आसीन करके साधक वास्तव में, अपने गुरु को ही यह स्थान देता है।

**ऋषिवर्णादिकौ धातू स्तो गत्या प्रापणेन च।**
**यात्याभ्यां यत्स्वरूपं स गुरुः स्याद्ऋषिवाचकः** ॥(वही, ६/३)

### छन्दस्

'छन्दस्' शब्द इच्छा अर्थ वाली 'छदु (इच्छायाम्) तथा दान

अर्थ वाली दाण् (दाने)धातुओंके योग से होता है।साधकको उसकी इच्छा के अनुरूप फल प्रदान करने वाले ‘तत्त्व’ को 'छन्दस्' कहा जाता है । यह छन्दस् अक्षरमय है। अतः अक्षरमय मन्त्र के वर्ण ही छन्दस् कहे जाते हैं।

**इच्छादानार्थकौ धातू स्तश्छदाद्यश्च दादिकः।**
**तयोरिच्छां ददातीति छन्दो मन्त्रार्णवाचकः** ॥(वही, ६/४)

## देवता

‘देवता' शब्द की निष्पत्ति क्रीडा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, कान्ति तथा गत्यर्थकादि धातु ‘दिवु’से अथवा विस्तार अर्थ वाली धातु 'तक्षु या त्वक्षु' से होता है। जो जीवात्मा के अज्ञानादि दोषों को क्षीण करके उसमें द्युति, देवत्त्व तथा आत्म-विस्तार में योग देता है, उसे 'देवता' कहा जाता है मन्त्र - साधना में मन्त्र का देवता साधक को मनुष्यत्व से उठाकर देवत्व तक पहुंचाता है। मन्त्र के देवता की आराधना, उसका चिन्तन एवं मनन बुद्धि और हृदय से किया जाता है, अतः उसकी प्रतिष्ठा या न्यास हृदय में किया जाता है।

**आत्मनो देवताभावप्रदानाद् देवतेति च।**
**पदं समस्ततन्त्रेषु विद्वद्भिः समुदीरितम्**॥(वही, ६/५)

## बीज

यद्यपि आचार्य शंकर ने ऋष्यादि न्यास के प्रसंग में बीज एवं शक्ति की चर्चा नहीं की है, तथापि पद्मपाद ने आचार्य शंकर द्वारा उद्घाटित प्रत्येक मन्त्र के निर्वचन में उस मन्त्र के बीज और शक्ति का उल्लेख किया है। जैसे सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ का एक बीज होता है, वैसे ही प्रत्येक मन्त्र का भी एक बीज होता है। बीज ही विकसित होकर वृक्ष बनता है। मन्त्रशास्त्र में बीज को मन्त्र का मूल बिन्दु माना जाता है। यह मन्त्र में शक्ति तत्त्व का संचार करता है। मानव शरीर में बीज की अभिव्यक्ति का स्थान गुह्येन्द्रिय अर्थात् जननेन्द्रिय है, अतः बीज का न्यास गुह्येन्द्रिय में किया जाता है।

## शक्ति

बीज को जाग्रत् अथवा संचरणशील बनाने का कार्य 'शक्ति' करती है। बीजात्मक शिव में सृजनादि का समावेश शक्ति द्वारा ही होता है। आचार्य शंकर के अनुसार ‘शिव’ जब शक्ति से युक्त होता है, तभी उसमें 'प्रभवन' (सृष्टि), स्थिति, संहार, तिरोधान तथा अनुग्रह नामक प्रपंचन की सामर्थ्य आती है। लेकिन, यदि वह शक्ति से रहित है, तब तो उसमें स्पन्दन करने की भी सामर्थ्य नहीं होती'।

**शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुम्।**
**न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि**।(सौन्दर्यलहरी १)

मन्त्र में प्रभविष्णुता या प्रभाव लाने का कार्य शक्ति ही करती है। व्यक्ति में संचरण की शक्ति उसके चरणों में होती है। अतः शक्ति का न्यास चरणों में किया जाता है।

## कीलक

आचार्य शंकर एवं पद्मपाद ने मन्त्रके छठे अंग 'कीलक'की चर्चा नहीं की है।वैसे, कीलक का काम मन्त्र और मन्त्र-साधकों को विचलन से बचाना है। कीलक का न्यास सर्वांगमें किया जाता है।

ऋष्यादि न्यास में मन्त्र के साक्षात्कार करने वाले ऋषि को अपने मस्तक (सहस्रार) में आसीन करने की भावना करता हुआ साधक अपने मूलाधार में स्थित आत्मतेज (कुण्डलिनी शक्ति)को मूलाधार से उठाकर सहस्रारमें स्थित परमात्मन् रूपी परम गुरु (शिव)से मिलाने की भावना करता है। इस भावन-क्रिया द्वारा वह सहस्रार स्थित परमात्मन् गुरुसे 'चिदादित्य रूपी' मन्त्रमय अमृत प्राप्त करता है। सहस्रार से वह आत्मतेज पुनः अपने मूलस्थान मूलाधार की ओर लौटता है। सहस्रार से स्रवित होने वाले मन्त्रमय अमृत से उस साधक का हृदय सहित समस्त शरीर आप्लावित हो जाता है।इसेही कुण्डलिनीका उत्थान तथा व्युत्थान क्रम कहा जाता है। आचार्य शंकर ने 'सौन्दर्यलहरी' में इनका उल्लेख किया है।

**महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं**
**स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि।**
**मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि जित्वा कुलपथं**
**सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे॥**

**सुधाऽऽधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः,**
**प्रपंचं सिंचन्ती पुनरपि रसाम्नाय महसा।**
**अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयम्,**
**स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि॥**
(सौन्दर्यलहरी ६-१०)

## अंगमन्त्र एवं षडंगन्यास

मन्त्रकी साधना में ऋष्यादिन्यास के अनन्तर 'षडंगन्यास' किया जाता है। यह न्यास क्रमशः हृदय, सिर, शिखा, कवच (कन्धों), नेत्र तथा अस्त्र (सर्वांग) में उक्त अंगों के साथ चतुर्थी विभक्ति लगा कर तथा उनके अन्त में क्रम से नमः , स्वाहा, वषट्, हुं, वौषट् तथा फट् शब्दों का प्रयोग करके किया जाता है

**हृदयशिरसोः शिखायां कवचाक्ष्यस्त्रेषु सहचतुर्थीषु।**
**नत्या हुत्या च वषड् हुं वौषट् फट्पदैः षडंगविधिः॥**(वही, ६/६)

अंगन्यासकी विधि स्वसम्प्रदायानुसार भिन्न होसकती है।शाक्त -साधकों की परम्परा में हृदयन्यास में तर्जनी तथा मध्यमा नामक अंगुलियोंसे हृदय एवं सिर का, बंधी हुई मुट्ठी वाले अंगूठे से शिखा का, दोनों हथेलियों से सर्वांग का, तर्जनी एवं अनामिका से नेत्रों का (मध्यमा से भ्रूमध्य में स्थित तीसरे नेत्र) स्पर्श करके तथा चोटी के बन्धन से दिग्बन्ध की षडंग क्रिया सम्पन्न की जाती है।

## षडंग जातियों का अर्थ

### नमः

'नमः 'का अर्थ प्रणाम है। परमात्मा हृदयमें स्थित है(हृदि+ अयम् इति हृदयम्) ।इसे सूक्ष्म तत्त्वदर्शिनी बुद्धिसे देखा जा सकता है-**'दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ।'**(कठ.१-३-१२) परमात्माको साधक बुद्धि द्वारा अपने हृदयमें प्राप्त कर उसे नमस्कार करता है। इसी तथ्य को दिखानेके लिये षडंगन्यास में 'हृदय' पदके साथ 'नमः '(हृदयाय नमः )पदका प्रयोग किया जाता है ।

**हृदयं बुद्धिगम्यत्वात्प्रणामः स्यान्नमः पदम्।**
**क्रियते हृदयेनाऽतो बुद्धिगम्या नमस्क्रियाः ॥**(वही, ६/७)

### स्वाहा

'स्वाहा' का अर्थ 'समर्पण' है। शिरस् (सिर) सर्वोच्च अंग है। यहां परम शिव अर्थात् गुरु का निवास है। 'शिरस्' शब्द के साथ स्वाहा शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस न्यास क्रिया में साधक द्वारा 'शिरसे स्वाहा' मन्त्र के उच्चारण का अर्थ यह है कि 'मैं अपनी इन्द्रियों के द्वारा जिन-जिन विषयों का भोग करता हूं, उन्हें परम शिव को समर्पित करता हूं।

**तुंगार्थः स्याच्छिरः स्वे स्वे विषयाहरणे द्विठः।**
**शिरोमन्त्रेण चोत्तुंगविषयाहृतिरीरिता ॥**(वही, ६/८)

### शिखा

'शिखा' में परमात्मन् का 'तेजस' स्थित है। परमात्मन् का यही
तेजस् साधक के कार्य-कारण शरीर में भी व्याप्त है। शिखा के साथ 'वषट्' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'वषट्' अंग को कहते हैं

**शिखा तेजः समुद्दिष्टा वषडित्यंगमुच्यते।**
**तत्तेजोऽस्य तनुः प्रोक्ता शिखामन्त्रेण मन्त्रिणः ॥**(वही, ६/६)

विवरण के अनुसार कार्य और कारण शरीर को वषट् कहते हैं। न्यास-विधिमें 'शिखायै वषट्' कहने का अर्थ है कि 'मैं शिखास्थान में स्थित परमात्मा को अपने समस्त अंगों अर्थात् पूरे शरीर को समर्पित करता हूं।'

**"कार्यकारणात्मकं शरीरं वषडित्युच्यते"** इति विवरणे।

**कवच**

ग्रहणार्थक 'कव' धातु से 'कवच' शब्द बनता है। इसका अर्थ ग्रहण करना है। कवच के साथ 'हुं' का प्रयोग किया जाता है। 'हुं' का अर्थ भी 'तेजस्' है। अतः इस न्यास में 'कवचाय हुं' कह कर परमात्मन् के तेजस् द्वारा जीवात्मन् या साधक के तेजस् को ग्रहण या व्याप्त किये जाने की भावना की जाती है।

**कव ग्रहण इत्यस्माद्धातोः कवचसम्भवः।**
**हुं तेजस्तेजसा देहो गृह्यते कवचं ततः॥**(वही, ६/१०)

**नेत्र**

'वौषट्' का सम्बन्ध नेत्र से है। 'नेत्र' दृष्टि को तथा 'वौषट्' दर्शन को कहते हैं। नेत्र इन्द्रिय गोलक को नहीं, अपितु उस तेजस् को कहते हैं, जिसके द्वारा नेत्र-गोलकों में देखने की शक्ति आती है।वह शक्ति परमात्माका तेजस् हीहै-**'तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।'**(श्वे.६-१४; मुं.२-२-१०; कठ.१-२-१५)।न्यासविधिमें 'नेत्राभ्यां वौषट्' कह कर साधक परम तेजस् रूप परमात्मा का स्मरण करता है।

**नेत्रं दृष्टिः समुद्दिष्टा वौषड्दर्शनमुच्यते।**
**दर्शनं दृशि येन स्यात्तत्तेजो नेत्रवाचकम्॥**(वही, ६/११)

**अस्त्र**

'अस्त्र' शब्दकी निष्पत्ति 'असु क्षेपणे' तथा 'त्रस्' चलने इन दो
धातुओं के योग से होती है। आक्षेपण और चालन (खींचना और चलाना) 'अस्त्र'के स्वभाव हैं।अस्त्रके साथ 'फट्' का प्रयोग किया जाता है। 'फट्' शब्द का अर्थ रक्षा की भावना से देहादि का ईश्वर को समर्पण करना है।षडंगन्यास विधिमें 'अस्त्राय फट्'का उच्चारण कर साधक साधना में आने वाले बाधक तत्त्वों को अपनी भावना से खींचकर 'फट्' रूपी आग्नेयास्त्र द्वारा से उन्हें वैसे ही दूर फेंक देता है, जैसे ज्वलनशील पदार्थों से अस्त्र को संचालित कर उसे तथा उसमें रखे गये पदार्थों को दूर फेंक दिया जाता है।

**असुत्रसादिकौ धातू स्तः क्षेपचलनार्थकौ।**
**ताभ्यामनिष्टमाक्षिप्य चालयेत् फट् पदाग्निना॥**(वही, ६/१२)

शंकर के अनुसार सभी तन्त्रों में हृदयाय नमः , शिरसे स्वाहा, आदि न्यास के छह अंग ही अंगमन्त्र कहे जाते हैं। जिन मन्त्रों की न्यास - विधि में छह अंग नहीं, केवल 'पंचांग' का ही विधान है, उनमें 'नेत्रन्यास' नहीं किया जाता।

**अङ्गमन्त्रा इमे प्रोक्ता सर्वतन्त्रेषु मन्त्रिभिः।**
**पञ्चैव यस्य मन्त्रस्य भवन्त्यंगानि मन्त्रिणः॥**
**सर्वेष्वपि च मन्त्रेषु नेत्रलोपो विधीयते।**(वही, ६/१३-१४)

**करन्यास**

अंगन्यास के पश्चात् अंगन्यास के मन्त्रों द्वारा ही करन्यास किया जाता है। करन्यास का तात्पर्य भी कर के अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका करतल एवं करपृष्ठ में देवताओं, मन्त्रों, मन्त्रांगों आदि की प्रतिष्ठा करके करों को देवमय बनाना है। इसके बाद अस्त्र मन्त्र से दायें हाथ की अंगुलियों से बांयें हाथ की हथेली पर तीन बार ताडन करके इसी मन्त्र से दिग्बन्ध की क्रिया सम्पन्न की जाती है। आचार्य शंकर के अनुसार किसी भी मन्त्र के जप करने के आरम्भ में अंगन्यासादिरूपी उक्त नियम समान रूप से ग्रहण किये जाते हैं।

**अंगुलीषु क्रमादंगैरंगुष्ठादिषु विन्यसेत् ॥**
**कनिष्ठान्तासु तद् बाह्यतलयोः करयोः सुधीः।**
**अस्त्रेण तालत्रितयं कृत्वा तेनैव बन्धयेत् ॥**
**दिशो दश क्रमादंगषट्कं वा पंचकं न्यसेत्।**
**जपारम्भे मनूनां तु सामान्येयं प्रकल्पना ॥**(वही, ६/१४-१६)

दीक्षा तथा देव-साधना आदिके अवसरों पर प्रयुक्त किये जाने वाले षोडशांगन्यासं,षडङ्गन्यास,अजपादिन्यास,कला-केशवादिन्यास, ग्रहन्यास, सृष्टिन्यास, संहारन्यास आदि की विधि को आचार्य शंकर ने बहुत महत्त्वपूर्ण माना है। साधक के तन और मन में किये जाने वाले न्यासों का मूल उद्देश्य साधक के तन-मन को निर्मल बनाकर उसे देवत्व तक पहुंचाना है।इन विविध न्यासोंके स्वरूपका विवेचन मन्त्र - देवादि के साधना-प्रसंगों में किया जाना उचित होगा।

## समय विचार

किसी भी तंत्र-मंत्र साधना में समय का विचार आवश्यक है। कितनी ही कठोर साधना की जाय, यदि उसकी शुद्धि की ओर ध्यान न दिया जाय, तो सारा प्रयत्न निरर्थक-सा हो जाता है।

**मास**

यंत्र-मंत्र सिद्ध करने के लिए वैसाष, कार्तिक, आश्विन और माघ शुभ महीने माने गये हैं। यों अत्यावश्यक होने पर किसी भी महीने में इसका प्रयोग किया जा सकता है, पर “आषाढ़ शुक्ला एकादशी से आश्विन कृष्णा अमावस्या?” तक का समय सर्वथा वर्जित है।

**तिथियां**

शुक्ल पक्ष की द्वितीया, पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, दशमी एवं पूर्णमासी विशेष शुभ तिथियां मानी गई हैं।

**वार**

रवि, बुध, गुरु एवं शुक्र श्रेष्ठ वार हैं।

**नक्षत्र**

कृतिका, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, तीनों उत्तरा, अनुराधा एवं श्रवण नक्षत्र शुभ है।

**लग्न**

स्थिर लग्न वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ।

**स्थान**

तीर्थ भूमि, गंगा-यमुना संगम, नदी तीर, पर्वत-गुफायें, एकान्त देव मंदिर शुभ हैं, पर ये सुलभ न हों, तो घर का एकान्त कमरा उपयोग में लिया जा सकता है।

**यंत्र स्थापन**

शुभ दिन, शुद्ध समय में एकान्त स्थित साधना स्थान को स्वच्छ पानी से धो लें, कच्चा आंगन हो, तो गोबर (जो जमीन पर न गिरा हो) से लीप लें, तत्पश्चात् लकड़ी के एक समचौरस पट्टे पर श्वेत वस्त्र धोकर बिछा दें एवं उस पर चावलों से हाथ की आकृति का निर्माण करें।

तत्पश्चात् उस हाथ की आकृति के मध्य में ताम्र पत्रांकित पंचांगुली यंत्र स्थापित करें, उस पर लाल वस्त्र आच्छादित नारियल रखें एवं सम्भव हो, तो पंचांगुली देवी की स्वर्ण मूर्ति अथवा रजत मूर्ति स्थापित करें। मूर्ति सवा तोला या सवा पांच तोला वजन में हो।

फिर आगे बताई गई विधि से इक्कीस दिनों तक पूजन करें। साधारण समय में इक्कीस दिनों तक पूजन आवश्यक है। नवरात्रि में नौ दिन तक पूजन करें। नवरात्रि इस कार्य के लिए परम श्रेष्ठ मानी गई है।

**सामग्री**

तत्पश्चात् पूजन सामग्री एकत्र कर सामने रख लें। पूजन **सामग्री** निम्न है—

कुंकुम, नारियल जटा वाले, अबीर, चावल, गुलाल, बादाम, मौली, अखरोट, सुपारियां, काजू, केसर, किसमिस, पतासा, मिश्री, दुग्ध प्रसाद, अगरबत्ती, कपूर, लौंग, इलायची, काली मिर्च, यज्ञोपवीत, शहद, फल, इत्र, दीपक, कच्चा दूध, दही, घृत, शक्कर, पान, पुष्प, भोजपत्र, पुष्पमाला, पीपल के पत्ते, गंगाजल, कुंए का शुद्ध जल।

सामग्री एकत्र कर स्वयं धुले हुए वस्त्र पहिनें। धोबी के धुले कपड़े न पहिनें, बल्कि घर के धुले हों।

**ज्ञातव्य**

पूजन से पूर्व कुछ तथ्यों की जानकारी साधक को कर लेनी चाहिए—

अन्न शुद्ध हो, अपनी पत्नी के द्वारा पकाया गया हो या निकट सम्बन्धी के द्वारा पकाया गया हो।

प्याज, लहसुन आदि तामसी भोजन, शराब आदि का त्याग।

किसी दूसरे की कमाई का भोजन न हो। अशुद्ध स्थान पर न तो पकाया जाय, न भोजन किया जाय।

कुत्ते, बिल्ली, चाण्डाल आदि के स्पर्श से निमित्त दोष लगता है, इस ओर ध्यान रखना चाहिए।

रूखा, बासी और अशुद्ध भोजन न किया जाय।

जितना आवश्यक हो, उससे कम ही भोजन किया जाय।

कांसे के बर्तन में भोजन न करें।

स्त्री संसर्ग, स्त्री चर्चा त्याज्य हो (साधना के दिनों में)।

क्षौर कर्म न करें।

संध्या, गायत्री स्मरण निश्चित हो।

नग्नावस्था में, बिना स्नान के, अपवित्र हाथ से, सिर पर कपड़ा रखकर भी जप करना निषिद्ध है।

जप के समय माला पूरी हुए बिना बातचीत नहीं करनी चाहिए।

छींक, अपृश्य, अपानवायु होने पर हाथ धोने तथा कानों को जल से स्पर्श करें।

आलस्य, जम्हाई, छींक, नींद, थूकना, डरना, अपवित्र वस्त्र, बातचीत, क्रोध आदि जप काल में वर्जित हैं।

पहले दिन जितना जप किया जाय, रोज उतना ही जप करें, इसे घटाना-बढ़ाना उचित नहीं।

जप काल में शौच जाने पर पुनः स्नान कर जप में बैठें।

**जप काल के नियम**

जपकाल में निम्न नियमों का भी पालन किया जाना चाहिए—

1. भूमि शयन, 2. ब्रह्मचर्य, 3. नित्य स्नान, 4. मौन, 5. नित्य दान, 6. गुरु सेवा, 7. पापकर्म परित्याग, 8. नित्य पूजा, 9. देवतार्चन, 10. इष्टदेव व गुरु में श्रद्धा, 11. जप निष्ठा, 12. पवित्रता।

पूजन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व मंत्र उच्चारण करें, पर मंत्र उच्चारणसे पूर्व मुख शुद्धि जरूरी है। अशुद्ध जिह्वा से जपा हुआ मंत्र निष्फल होता है।

**मल शोधन**

मल तीन प्रकार के होते हैं, इन तीनों प्रकार के मलों का त्याग करें—

1. भोजन का मल

2. असत्य कथन का मल

3. कलह का मल

**मुख शोधन**

इस मल निवृत्ति एवं मुख शोधन के लिए जिस देवता का मंत्र हो, उससे सम्बन्धित मुख शोधन मंत्र का दस बार उच्चारण किया जाना चाहिए। मंत्र निम्न हैं—

| | | |
|---|---|---|
| दुर्गा | — | ऐं ऐं ऐं |
| बगलामुखी | — | ऐं ह्रीं ऐं |
| मातंगी | — | ॐ ऐं ॐ |
| लक्ष्मी | — | श्रीं |
| त्रिपुर सुन्दरी | — | श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ |
| धनदा | — | ॐ धूं ॐ |
| गणेश | — | ॐ गं |
| विष्णु | — | ॐ हूं |
| पंचांगुली | — | ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं |

इसके अतिरिक्त अन्य देवताओं की साधना में दस बार ॐ का ही उच्चारण करना चाहिए।

यह कार्य मुख शोधन कहलाता है।

**मंत्र चैतन्य**

पंचांगुली की साधना में मंत्र चैतन्य 'ई' है, अतः मंत्र के प्रारम्भऔर अन्त में 'ई' सम्पुट देने से मंत्र चैतन्य हो जाता है।

मंत्र चैतन्य के बाद योनिमुद्रा का अनुष्ठान किया जाय। यदि योनिमुद्रा अनुष्ठान का ज्ञान न हो, तो 'भूतलिपि विधान' करना चाहिए।

**प्राणयोग**

**ह्रीं** (मूलमंत्र)

इसका सात बार उच्चारण करने से मंत्र प्राणमय हो जाता है।

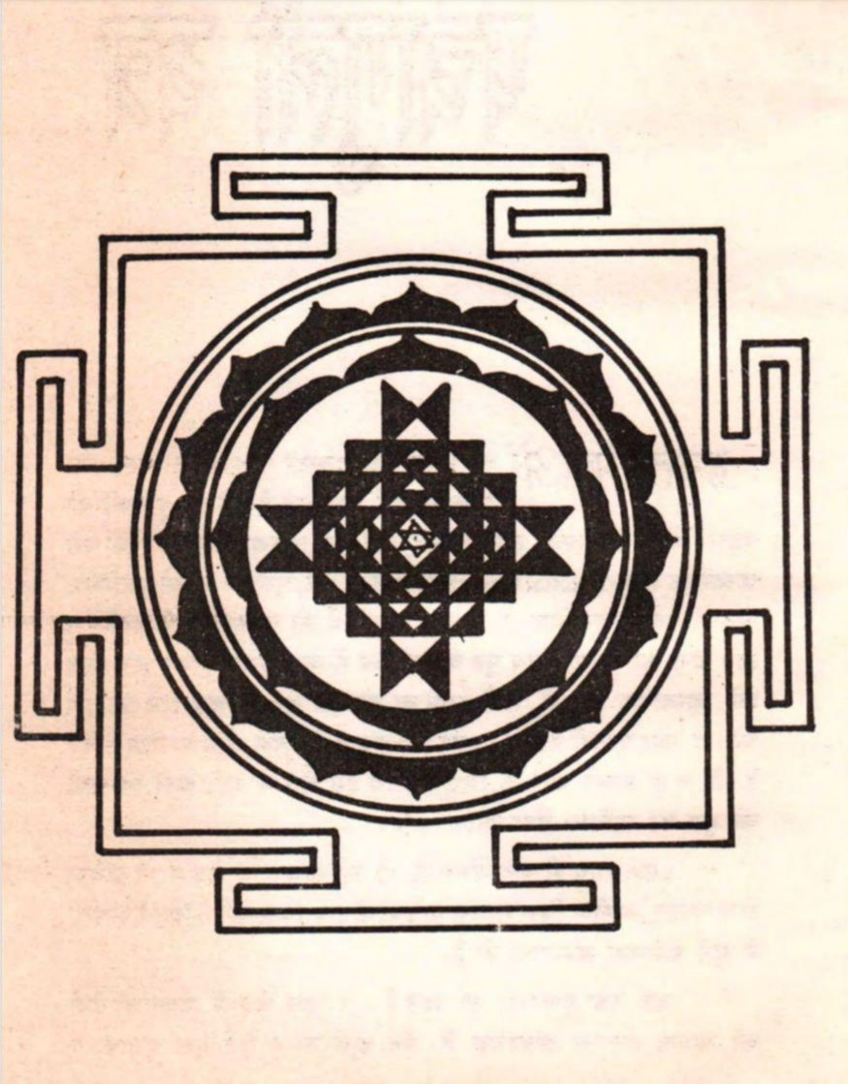
**दीपनी**

पंचांगुली देवी की दीपनी **'ऐं'** है।, अतः ऐं (मंत्र) का सात बार उच्चारण करना चाहिए।

**पंचांगुली मंत्रः १**

**ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोंटिंगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषिणीमध्ये शेकनीमध्ये गुणीमध्ये गारुड़ीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।**

मंत्र स्मरण करने के उपरान्त पंचांगुली यंत्र पर लेख्य करें। पूजन से पूर्व ही रजत पत्र या ताम्र पत्र पर अंकित यह यंत्र प्राप्त कर लें (इस समय केवल अष्ट गंध से उस पर लेपन करें) तथा यंत्र को कलश के सामने ताम्र पात्र या रजत पात्र में स्थापित करें।



**पञ्चाङ्गुली यन्त्र १**

फिर आचमन प्राणायामादि के उपरान्त संकल्प करें, तत्पश्चात् गणपति पूजन, कलश पूजन, नवग्रह पूजन, षोडष मातृका पूजन करें।

**ध्यान—**

**पञ्चाङ्गुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने।**
**अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः॥**

फिर निम्न लिखित न्यास करें—

**न्यास**

पूजनारम्भ से पूर्व न्यास करना परमावश्यक है।

| | |
|---|---|
| **ॐ परशरि मूर्तये नमः** | **शिरसि** |
| **मयंगलै नमः** | **मुखे** |
| **सुन्दर्यै नमः** | **हृदि** |
| **ऐं बीजाय नमः** | **गुह्ये** |
| **सौं शक्तये नमः** | **पादयोः** |
| **क्लीं कीलकाय नमः** | **नाभौ** |
| **विनियोगाय नमः** | **सर्वांगे** |

**करशुद्धि न्यास**

**ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।**

**ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।**

**ॐ क्रीं मध्यमाभ्यां नमः ।**

**ॐ आं अनामिकाभ्यां नमः ।**

**ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।**

**ॐ ह्रीं श्रीं सौं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।**

**हृदयादिन्यास**

**ॐ ह्रीं हृदयाय नमः ।**

**ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।**

**ॐ क्रीं शिखायै वषट् ।**

**ॐ आं कवचाय हुम् ।**

**ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्।**

**ॐ ह्रीं श्रीं सौं अस्त्राय फट्।**

इसके पश्चात् यंत्र पूजा प्रारम्भ करें। यंत्र पूजा से पूर्व संकल्प करें —

**ॐ अस्य श्री कस्यचित् सच्चिदानंद रूपस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य मायाशक्ति विजृंभिता विद्या योगात् कालक्रम स्वभावाविर्भूत महत्त्वोदिताहंकारोद्भूत वियदादि पंच महाभूतेन्द्रिय देवता निर्मिते, अंडकटाहे, चतुर्दश लोकात्मके, लीलया तन्मध्यवर्तिनी भगवतः श्री नारायणस्य नाभि कमलोद्भूत सकल लोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धारणाय प्रजापति प्रार्थितस्य श्री सित वाराहवतारेण ध्रियमाणायां यस्यां धरित्र्याम् भुवर्लोक सहितायां सप्तद्वीप मंडितायां क्षीरोदाद्यब्धि द्विगुणद्वीप वलयिकृत लक्ष योजन विस्तीर्णे, जम्बूद्वीपे।**

**स्वर्गस्थिता अमराद्या सा शितवतारे, गंगादि सरिद्भिः प्राविते: निखिल जन मुनिकृत निवसतिके, नैमिशारण्ये कन्या कुमारिका क्षेत्रे पुष्करारण्ये श्री मन्मार्तण्डस्य कृपापात्र कालत्रितयज्ञ गर्गवाराह ऋषय संख्यायां श्री ब्रह्मणोद्वितीय परार्द्धे, श्री श्वेतवाराह नाम्नि प्रथम कल्पे, द्वितीय यामे, तृतीय मुहूर्ते, चतुर्थे युगे, स्वायंभुवः स्वारोचित उत्तमः तामसः रैवतः चाक्षुसेति षण्मनूनां मतिक्रमोस्यात् क्रम्यमाणे संप्रति वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतिमे वर्षे त्रिनवे त्रिग्नेयाते कलियुगे कलि प्रथम चरणे श्री मल्लवणाब्धे उत्तरे तीरे गंगायमुनयोः पश्चिमे तटे।**

**शालीवाहन बौद्धावतारे विक्रम भूपकृतः संवत्सरे संवत... नाम संवत्सरे (एकोन त्रिशत्युत्तर द्विसहस्त्रमे) वर्षे रविर्नारायण (उत्तरायने) कृतौ मासे महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे शुभ मासे पक्षे आद्य तिथौ... वाराधिपति श्रीमद्... वासरे यथा नक्षत्र योग करण लग्न एवं ग्रह विशेषण विशिष्टायां अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेसु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थिते सप्तसु एवं ग्रह गुण विशेष विशिष्टायां शुभपुण्यस्थितौ ....गोत्रस्य श्री(यजमान का नाम) यजमानस्य शरीरे।**

**आयु आरोग्य ऐश्वर्यवांछित फल प्राप्तये.......**

## यंत्र पूजा

ध्यान

**ॐ भूर्भुवः स्वः श्री पंचांगुली देवीं ध्यायामि।**

आवाहन

**आगच्छागच्छ देवेशि! त्रैलोक्य तिमिरापहे।**
**क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तमे॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः आवाहनं समर्पयामि॥

आसन

**रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व सौख्य करं शुभम्।**
**आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि !॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि॥

पाद्य

**उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुक्तम्।**
**पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः पंचांगुली देवताभ्यो नमः पाद्य समर्पयामि॥

अर्घ्य

**अर्घ्यं गृहाण देवेशि ! गन्ध पुष्पाक्षतैः सह।**

**करुणां कुरु मे देवि ! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥**

आचमनीय

**सर्व तीर्थ समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।**
**आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरि ॥**

स्नान

**गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः ।**
**स्नापिताऽसि मया देवि ! ततः शान्तिं कुरुष्व मे ॥**

पय स्नान

**कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।**
**पावनं यज्ञ हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥**

दधि स्नान

**पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।**
**दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥**

घृत स्नान

**नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोष कारकम् ।**
**घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥**

मधु स्नान

**तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।**
**तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥**

शर्करा स्नान

**इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।**
**मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥**

पंचामृत स्नान

**पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करा युतम् ।**
**पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥**

वस्त्र

**सर्वभूषाधिके सौम्ये लोक लज्जा निवारिणे ।**
**मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥**

यज्ञोपवीत

**नवभिस्तन्तुभिर्युक्त त्रिगुणं देवता मयम् ।**
**उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥**

गन्धम्

**श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।**
**विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥**

अक्षत

**अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।**
**मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥**

पुष्प

**माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।**
**मयानीतानि पुष्पाणि प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥**

सौभाग्य द्रव्य

**श्वेत चूर्ण रक्त चूर्ण हरिद्रा कुंकुमान्वितैः।**
**नानापरिमल द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वरि॥**

धूप

**वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।**
**आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**

दीप

**आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया।**
**दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्य तिमिरापहा॥**

नैवेद्य

**नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।**
**ईप्सितं मे वरं देहि परत्रेह परां गतिम्॥**

ताम्बूल

**पूंगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।**
**एलादि चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥**

ऋतु फल

**इदं फलं मया देवि ! स्थापितं पुरतस्तव।**
**तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥**

दक्षिणा

**हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।**
**अनन्त पुण्य फलद मतः शांतिं प्रयच्छ मे॥**

कर्पूर आरती

**ॐ आरार्ति पार्थिवꣳ रजः पितुर प्रायिधामभिः ।**
**दिव सदाꣳ सि बृहती वितिष्ठ स आत्वेषं वर्तते तमः ॥**

**ॐ कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।**

**आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥**

मंत्र पुष्पाञ्जलि

**ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः ॥**

मानसी प्रदक्षिणा

**यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।**

**तानि तानि प्रदश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥**

विशेषार्घ्य

**नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर।**

**नमस्ते जगदाधार अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम्॥**

**वरदत्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद।**

**अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥**

**गतं पापं गतं दुः खं गतं दारिद्रयमेव च।**

**आगता सुख सम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्॥**

पूजा के पश्चात् यंत्र की विशेष पूजा प्रारम्भ की जाय।

**प्रथमावरण पूजन**

प्रथमावरण में यंत्र के चारों ओर जो चार रेखाओं की परिधि है, उसका पूजन होगा, क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ रेखा का अलग-अलग पूजन करें। पूजा का प्रारम्भ पश्चिम द्वार, उत्तर द्वार, पूर्व द्वार एवं फिर दक्षिण द्वार से होगा।

प्रथम रेखा पूजन

इसमें नमः कहने के बाद गंध, अक्षत, पुष्प चढ़ाना चाहिए।

**श्री त्रैलोक्य मोहिनी नमः।**

**श्री सर्वसिद्धप्रदः नमः।**

**श्री सर्व रक्षाकरः नमः।**

**श्री सर्वार्थ साधकः नमः ॥**

द्वितीय रेखा पूजन

| | |
|---|---|
| **श्री ब्राह्मै नमः** | **(पश्चिम)** |
| **श्री माहेश्वर्यै नमः** | **(कोण)** |
| **श्री कौमार्यै नमः** | **(उत्तर)** |

**श्री वैष्णव्यै नमः** **(कोण)**

**श्री वाराह्यै नमः** **(पूर्व)**

**श्री इन्द्राण्यै नमः** **(कोण)**

**श्री लक्ष्म्यै नमः** **(दक्षिण)**

**श्री पंचांगुल्यै नमः** **(कोण)**

तृतीय रेखा पूजन

**श्री कामाकर्षिणी नमः।**

**श्री बुद्ध्याकर्षिणी नमः।**

**श्री अहंकाराकर्षिणी नमः।**

**श्री शब्दाकर्षिणी नमः।**

**श्री स्पर्शाकर्षिणी नमः।**

**श्री रूपाकर्षिणी नमः।**

**श्री रसाकर्षिणी नमः।**

**श्री गन्धाकर्षिणी नमः।**

(दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा)

चतुर्थ रेखा पूजन

**श्री चित्ताकर्षिणी नमः।**

**श्री धैर्याकर्षिणी नमः।**

**श्री स्मृत्याकर्षिणी नमः।**

**श्री नामाकर्षिणी नमः।**

**श्री बीजाकर्षिणी नमः।**

**श्री आत्माकर्षिणी नमः।**

**श्री अमृताकर्षिणी नमः।**

**श्री शरीराकर्षिणी नमः।**

(पूजन में दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा)

इस प्रकार से चारों रेखाओं का पूजन कर, पुनः चारों रेखाओं का एक साथ षोडशोपचार पूजन कर पुष्पाञ्जलि एवं नैवेद्य भेंट करें।

द्वितीयावरण पूजन

इस आवरण में यंत्र के षोडश कमलों का पूजन होगा। दिशाओं का क्रम ऊपरलिखित ही होगा।

**ॐ सर्वज्ञायै नमः ।**

**ॐ सर्वशक्तिप्रदायः नमः ।**

**ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायः नमः ।**

**ॐ सर्वज्ञानमयी नमः ।**

**ॐ सर्व व्याधि नाशिन्यै नमः ।**

**ॐ सर्वाधारायै नमः।**

**ॐ सर्वपापहरायै नमः ।**

**ॐ सर्वानन्दमयी नमः ।**

**ॐ सर्वरक्षामयी नमः ।**

**ॐ सर्वेप्सित फलप्रदामयी नमः ।**

**ॐ कामेश्वरी नमः ।**

**ॐ सर्वेश्वरी नमः ।**

**ॐ मोहिनी नमः ।**

**ॐ जयिनी नमः ।**

**ॐ कामरूपायै नमः ।**

**ॐ विश्वमोहिन्यै नमः ।**

तृतीयावरण पूजन

इस पूजा में अन्दर के अष्टदलों का पूजन होगा। अष्टदलों के पूजन में दिशाओं का क्रम पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर होगा। फिर कोणों का पूजन क्रमशः आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान होगा।

इसमें प्रत्येक दल का पूजन षोडशोपचार से अलग-अलग होगा।

**ॐ ह्रीं अं इं उं एं ओं ब्राह्म्यै नमः ।तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥**

**ॐ ह्रीं कं खं गं घ ङ माहेश्वर्यै नमः । तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥**

**ॐ ह्रीं चं छं जं झं ञं कौमार्यै नमः । तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**ॐ ह्रीं टं ठं डं ढं णं वैष्णव्यै नमः तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**ॐ ह्रीं तं थं दं धं नं वाराह्यै नमः तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**ॐ ह्रीं पं फं बं भं मं ऐन्द्राण्यै नमः तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**ॐ ह्रीं यं रं लं वं चामुण्डायै नमः तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**ॐ ह्रीं शं षं सं हं महालक्ष्म्यै नमः तत् पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।**

चतुर्थावरण पूजा

इस आवरण में सोलह त्रिकोण हैं। पश्चिम त्रिकोण से होकर वाम भाग से आगे के त्रिकोणों का पूजन होगा-

**ॐ ॐ ॐ नमः।**

**श्रीं श्रीं श्रीं नमः।**

**ह्लीं ह्लीं ह्लीं नमः।**

**क्रीं क्रीं क्रीं नमः।**

**सौं सौं सौं नमः।**

**ह्लौं ह्लौं ह्लौं नमः।**

**वं वं वं नमः।**

**सं सं सं नमः।**

**हं हं हं नमः।**

**गं गं गं नमः।**

**जं जं जं नमः।**

**भ्रां भ्रां भ्रां नमः।**

**जूं जूं जूं नमः।**

**क्रौं क्रौं क्रौं नमः।**

**ठं ठं ठं नमः।**

**दं दं दं नमः।**

तत्पश्चात् षोडश त्रिकोणों का समग्र पूजन करें। पूजन मंत्र निम्न है-

**ॐ ॐ ॐ श्रीं ॐ ह्लीं ॐ क्रीं ॐ सौं ॐ ह्लौं ॐ वं ॐ सं ॐ हं ॐ गं ॐ जं ॐ भ्रां ॐ जूं ॐ क्रौं ॐ ठं ॐ दं ॐ ॐ ॐ।**

पंचमावरण पूजन

इस आवरण में द्वादश त्रिकोण हैं, पश्चिम त्रिकोण से पूजन आरंभकर वाम भाग से आगे के त्रिकोणों का क्रमशः पूजन होगा-

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं अलम्बुषायै नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं कुहू नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं विश्वोदरी नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं वारणा नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं हस्तिजिह्वा नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं यशोवती नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं पयस्विनी नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं गान्धारी नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टैं तं पं यं सं पूषा नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं शंखिनी नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं सरस्वती नमः पूजयामि।**

**ॐ अं कं चं टं तं पं यं सं इडा नमः पूजयामि।**

षष्ठावरण पूजन

इस आवरण में दस त्रिकोणों का पूजन होगा। पश्चिम त्रिकोण से प्रारम्भ कर क्रमशः बायें चलते हुए पूजा होगा।

**ॐ सर्वज्ञै नमः।**

**ॐ सर्वशक्तिमयी नमः।**

**ॐ सर्वेश्वर्यप्रदा नमः।**

**ॐ सर्वज्ञानप्रदा नमः।**

**ॐ कर ज्ञानप्रदा नमः।**

**ॐ काल ज्ञानप्रदा नमः।**

**ॐ सर्वसिद्धिप्रदा नमः।**

**ॐ सर्वातीता नमः।**

**ॐ सर्वभावी नमः।**

**ॐ सम्मोहनाय नमः।**

सप्तमावरण पूजन

इस आवरण में आठ त्रिकोण हैं, पूजन पश्चिम त्रिकोण से

पूर्ववत् होगा-

**ॐ श्रीं आकर्षय नमः ।**

**ॐ श्रीं बीजाय नमः ।**

**ॐ श्रीं धिष्ठाय नमः ।**

**ॐ श्रीं विष्ठाय नमः ।**

**ॐ श्रीं अविष्ठाय नमः ।**

**ॐ श्रीं त्र्यष्ठाय नमः ।**

**ॐ श्रीं महिष्ठाय नमः ।**

**ॐ श्रीं पुरिष्ठाय नमः ।**

भविष्यत् पूजन—तत्पश्चात् भविष्यत् पूजन करें-

**ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ॐ नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लुं नमः । ॐ लूं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः।**

**ॐ ङ नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं**

**नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः। ॐ त्रं नमः। ॐ ज्ञं नमः।**

इसके बाद अष्टमावरण पूजन करें।

अष्टमावरण पूजन

इस आवरण में मुख्य देवी का पूजन है। देवी के पूजन से पूर्व उसके मुख्य त्रिकोण का पूजन करें। पहले पश्चिमी रेखा और फिर बायें से आगे की रेखाओं का पूजन हो -

**श्री बाणशक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**श्री धनुः शक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।**

**श्री पाश शक्ति पूजयामि तर्पयामि नमः।**

इसके अनन्तर त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए अक्षत-पुष्प छोड़ते रहें-

**ॐ सर्वे वै देवा देवी मुपतस्थुः कासि त्वं महादेवि ! साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृति पुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च। अहमानंदा ना नंदो अहं विज्ञाना विज्ञाने अहं ब्रह्मा ब्रह्मणी द्वे ब्रह्मर्षी वेदितव्ये। इति वाऽधर्वणी श्रुतिः। अहं पञ्चभूतानि अहं पञ्च तन्मात्राणि अहंपरिवल जगत् वेदोऽहम् वेदोऽहम्। विद्याऽहमविद्याऽहम्। अधश्चोर्द्धं तिर्यक् चाहम्। अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यै रुत विश्वे देवैः। अहं मित्रावरुणा वुभौ बिभर्ति अहमिन्द्राग्नि अहमश्विना वुमा अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि अहं विष्णु रुरुक्रमम्। ब्रह्माण मुत प्रजापतिं दधामि अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राप्ये यजमानाय सुव्रते अहं राज्ञी संगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वान्त समुद्रे य एवं वेद स दैवीं सम्पदमाप्नोति ते देवा अब्रुवन्।**

**नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।**
**नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥**
**तामग्नि वर्णां तपसा वैरोचनीं कर्मफलेषु ज्वलन्तीं-जुष्टाम्।**
**दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये- महेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥**
**दैवीं वाचं जनयन्त देवारतां - विश्वरूपां पशवो वदन्ति।**
**सानो मन्द्रेषमूजंदुहाना धेनुर्वागस्मा नुप सुष्ठु तै तु॥**
**कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्द मातरम्।**
**सरस्वतीमदितिं दक्ष दुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥**
**महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्॥**
**अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।**
**तां देवीं मन्वजायन्तभद्रा अमृत बान्धवः।**
**कामयोनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हंसामातलिश्चाभमिन्द्र।**

एनर्गुहा सकला मायया च पृथक् क्लेशा।
विश्व मातादि विद्याः एषात्म शक्तिः।
एषा विश्व मोहिनी पाशांकुश धर्नुबाणधरा।
एषा श्री श्री महाविद्याः। य एवं वेद स शोकं तरति।
नमस्ते भगवति मातरस्मान्पाहि सर्वतः ।

सैषा वैष्णवा वसवः सैवैकादश रुद्राः सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वे देवाः सोमपा असोमपाश्च सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाच यक्ष सिद्धाः सैषा सत्वरजस्तमांसि सैषा ब्रह्मा विष्णु रुद्ररूपिणी सैषा प्रजापतीन्द्र मनवः सैषा ग्रह नक्षत्र ज्योतिष्कला काष्ठादि विश्वरूपिणी तामहं प्रणौमि नित्यम्।

पापापहारिणी देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां सर्वदा शिवाम्॥
विवदाकार संयुक्तं वीति होत्र समन्वितम्।
अर्द्धन्दुलसितं देव्या वाजं सर्वार्थ साधकम्॥
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्ध चेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्द मया ज्ञानाम्बुराशयः ॥
वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात् षष्ठ वक्त्र समन्विताम्।
सूर्यो वामश्रोत्र बिन्दु संयुक्ताकाष्ठ तृतीयकम्॥
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधार युक्तयः।
विच्चे नवार्ण कोणस्य महनानन्ददायकः ॥
हृत्पुण्डरीक मध्यस्थां प्रातः सूर्य समप्रभाम्।
पाशांकुशधरां सौम्यां वरदा भय हस्तकाम्॥
त्रिनेत्रां रक्त वसनां भक्त काम दुहां भजे।
भजामि त्वां महादेवि! महाभय विनाशिनी॥
महादारिद्य शमनी महाकारुण्य रूपिणी।
यस्यां स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता।
यस्या लक्षं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अजा।
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते ऽनेका।
अत एवोच्यतेऽज्ञेयनन्तालक्षा चैका नेका।
मंत्राणां मातृकादेवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।

**ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्य साक्षिणी ॥**
**यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।**
**तां दुर्गा दुर्गमां देवीं दुराचार विघातिनीम् ॥**
**नमामि भयभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।**
**योऽधीते स प्रञ्चाथर्व शीर्ष फल माप्नोति ॥**
**इदमथ योऽर्चा स्थापयति।**
**शत लक्षं प्रजप्ताऽति नार्चा शुद्धिं च विन्दति।**
**शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या विधिः स्मृतः ॥**
**दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।**
**महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥**
**सायमधीयानो दिवस कृतं पापं नाशयति।**
**प्रातरधीयाना रात्रिकृतं पापं नाशयति।**
**सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति।**
**निशीधे तुरीय सन्ध्यां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति।**
**नूतनाया प्रतिमाया देवता सान्निध्यं भवति। य एवं वेद।**

अब यंत्र जो ताम्र, स्वर्ण या चांदी का हो या मूर्ति हो, तो उसका षोडशोपचार पूजन करें, फिर निम्नलिखित मंत्र से देवी का आवाहन करें -

आवाहन

**श्री अंगुष्ठ रूपे अंगुष्ठ पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**
**श्री तर्जनी रूपे तर्जनी पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**
**श्री मध्यमा रूपे मध्यमा पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**
**श्री अनामिका रूपे अनामिका पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**
**श्री कनिष्ठिका रूपे कनिष्ठिका पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**
**श्री पंचांगुली रूपे पंचांगुली पद पूजयामि, तर्पयामि नमः।**

भूत शुद्धि

**मूलाधारात्समुत्थाप्य कुण्डली पर देवताम्।**
**सुषुम्ना मार्गमाश्रित्य ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत्।**
**जीवं ब्रह्माणि संयोज्य हंस मंत्रेण साधकः।**

तत्पश्चात् यंत्र के मध्य सिंहासन पर विराजमान देवी की कल्पना कर उस पर निम्न मंत्र पढ़कर अक्षत छोड़ते जायें।

**ॐ हंसः सोऽहम्**
**ज्ञलयो ज्ञकारे**

| | |
|---|---|
| त्रलयो | त्रकारे |
| क्षलयो | क्षकारे |
| हलयो | हकारे |
| सलयो | सकारे |
| षलयो | षकारे |
| शलयो | शकारे |
| वलयो | वकारे |
| ललयो | लकारे |
| रलयो | रकारे |
| यलयो | यकारे |
| मलयो | मकारे |
| भलयो | भकारे |
| बलयो | बकारे |
| फलयो | फकारे |
| पलयो | पकारे |
| नलयो | नकारे |
| धलयो | धकारे |
| दलयो | दकारे |
| थलयो | थकारे |
| तलयो | तकारे |
| णलयो | णकारे |
| ढलयो | ढकारे |
| डलयो | डकारे |
| ठलयो | ठकारे |
| टलयो | टकारे |
| ञलयो | ञकारे |
| झलयो | झकारे |
| जलयो | जकारे |
| छलयो | छकारे |
| चलयो | चकारे |
| ङलयो | ङकारे |
| घलयो | घकारे |

| | |
|---|---|
| गलयो | गकारे |
| खलयो | खकारे |
| कलयो | ककारे |
| अः लयो | अः कारे |
| अंलयो | अंकारे |
| औलयो | औकारे |
| ओलयो | ओकारे |
| ऐलयो | ऐकारे |
| एलयो | एकारे |
| लॄलयो | लॄकारे |
| लृलयो | लृकारे |
| ॠलयो | ॠकारे |
| ऋलयो | ऋकारे |
| ऊलयो | ऊकारे |
| उलयो | उकारे |
| ईलयो | ईकारे |
| इलयो | इकारे |
| आलयो | आकारे |
| अलयो | अकारे |

सहस्त्राम्बुजे ब्रह्मरन्ध्रे परमात्मनि लयं गतः।
ॐ ज्ञकारम् ज्ञकारे उपसंहरामि।
ॐ त्रकारम् त्रकारे उपसंहरामि।
ॐ क्षकारम् क्षकारे उपसंहरामि।
ॐ हकारम् हकारे उपसंहरामि।
ॐ सकारम् सकारे उपसंहरामि।
ॐ षकारम् षकारे उपसंहरामि।
ॐ शकारम् शकारे उपसंहरामि।
ॐ वकारम् वकारे उपसंहरामि।
ॐ लकारम् लकारे उपसंहरामि।
ॐ रकारम् रकारे उपसंहरामि।
ॐ यकारम् यकारे उपसंहरामि।
ॐ मकारम् मकारे उपसंहरामि।

ॐ भकारम् भकारे उपसंहरामि।
ॐ बकारम् बकारे उपसंहरामि।
ॐ फकारम् फकारे उपसंहरामि।
ॐ पकारम् पकारे उपसंहरामि।
ॐ नकारम् नकारे उपसंहरामि।
ॐ धकारम् धकारे उपसंहरामि।
ॐ दकारम् दकारे उपसंहरामि।
ॐ थकारम् थकारे उपसंहरामि।
ॐ तकारम् तकारे उपसंहरामि।
ॐ णकारम् णकारे उपसंहरामि।
ॐ ढकारम् ढ़कारे उपसंहरामि।
ॐ डकारम् डकारे उपसंहरामि।
ॐ ठकारम् ठकारे उपसंहरामि।
ॐ टकारम् टकारे उपसंहरामि।
ॐ ञकारम् ञकारे उपसंहरामि।
ॐ झकारम् झकारे उपसंहरामि।
ॐ जकारम् जकारे उपसंहरामि।
ॐ छकारम् छकारे उपसंहरामि।
ॐ चकारम् चकारे उपसंहरामि।
ॐ ङकारम् ङकारे उपसंहरामि।
ॐ घकारम् घकारे उपसंहरामि।
ॐ गकारम् गकारे उपसंहरामि।
ॐ खकारम् खकारे उपसंहरामि।
ॐ ककारम् ककारे उपसंहरामि।
ॐ अः कारम् अः कारे उपसंहरामि।
ॐ अंकारम् अंकारे उपसंहरामि।
ॐ औकारम् औकारे उपसंहरामि।
ॐ ओकारम् ओकारे उपसंहरामि।
ॐ ऐकारम् ऐकारे उपसंहरामि।
ॐ एकारम् एकारे उपसंहरामि।
ॐ लृकारम् लृकारे उपसंहरामि।
ॐ लृकारम् लृकारे उपसंहरामि।

**ॐ ॠकारम् ॠकारे उपसंहरामि।**

**ॐ ऋकारम् ऋकारे उपसंहरामि।**

**ॐ ऊकारम् ऊकारे उपसंहरामि।**

**ॐ उकारम् उकारे उपसंहरामि।**

**ॐ ईकारम् ईकारे उपसंहरामि।**

**ॐ इकारम् इकारे उपसंहरामि।**

**ॐ आकाम् आकारे उपसंहरामि।**

**ॐ अकारम् अकारे उपसंहारामि।**

**सहस्त्रदलम्बुजाकारे ब्रह्मरन्धे लयम्।**

भूतोपसंहार

**यं यं (16 बार 'यं' बोले) वन्हीं बीजं स्मरेन्नित्यं निर्दहेत्पापपुरुषम्। रं रं (64 बार 'रं' बोले) वायु बीजेन तद्रक्षां बहिर्निष्कास्ययत्नः। यं यं (32 बार 'यं' बोले) सुधाबीजेन देहोत्थं भस्मसप्लावयेत्सुधीः। वं वं (16 बार 'वं' बोले) भूबीजेन घनीकृत्वा भस्म तत्कनकाण्डवत्। लं लं (16 बार 'लं' बोले) विशुद्ध मुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं स्मरेत्। आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत्। अखण्डं ब्रह्म तस्मात्स्यात्प्रेरक पुरुषस्तथा। प्रकृतेर्महदाकारस्ततोऽहं त्रिगुणा-त्मकः। तस्माकः तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशद्वायुः वायोरग्निः। अग्नेराप अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः ओषधीम्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरुषः सवा एष पुरुषोऽन्नरसमयः हंसः सोऽहम्। कुण्डली जीव मादाय परसन्गामयीम्। संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधारं गतं स्मरेत्॥**

इसके बाद यंत्र अथवा मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण प्रतिष्ठा

**ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजु सामानि छन्दासि। क्रियामय वपुः प्राण शक्तिर्देवता। आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलम्। प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।**

**ॐ ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषिभ्यो नमः शिरसि।**

**ऋग्यजुः सामच्छन्देभ्यो नमः मुखे।**

**प्राणशक्तये नमः हृदये।**

**आं बीजाय नमः लिंगे।**

**ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।**

**क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगेषु।**

न्यास

**ॐ अं कं खं गं घं ङ आं पृथिव्याप्तेजो वाय्वाकाशात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।**

**ॐ इं चं छं जं झं जं ईं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने तर्जनीभ्यां नमः।**

**ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः।**

**ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां नमः।**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं औं वचनादान गति विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**

**ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं अः मनो बुद्धयहंकार चित्त विज्ञानात्मने करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

**ॐ अं कं खं गं घं ङ आं पृथिव्याप्तेजो वाय्वाकाशात्मने हृदयाय नमः।**

**ॐ इं चं छं जं झं जं ईं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने शिरसे स्वाहा।**

**ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट्।**

**ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं वाक् पाणि पाद पायूपस्थात्मने कवचाय हूं।**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं औं वचनादान गति विसर्गानन्दात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।**

**ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं त्रं ज्ञं अः मनो बुद्धयहंकार चित्त विज्ञानात्मने अस्त्राय फट्।**

**ॐ आं इति नाभिमारभ्य पादान्तं स्पृशेत्।**

**ॐ ह्रीं इति हृदयमारभ्य नाभ्यन्तं च स्पृशेत्।**

**ॐ क्रौं इति मस्तकमारभ्य हृदयान्तं च स्पृशेत्।**

ध्यान

**रक्ताम्भोधिस्थ पोतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढ़ा कराब्जैः**
**पाशं कोदण्ड भिक्षूद्भव मथ गुणमप्यंकुशं पंच बाणान्।**
**विभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयन लसितापीन वक्षोरुहाढ्या**
**देवी बालार्क वर्णा भवतु सुचाकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥**

**ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वंशं षं सं हं सः सोऽहम् प्राणा इह प्राणः।**

**ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः जीव इह स्थितः ।**

**ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राणवाक्पाणि पाद पायूपस्थानीहैवागत्यसुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

**ॐ ॐ मम देहस्य पंचदश संस्काराः सम्पद्यन्ताम् इत्युक्त्वा। इति प्राण प्रतिष्ठा॥**

प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद अन्तर्मातृका न्यास करें -

अन्तर्मातृका न्यास

ॐ अस्य श्रीरन्तर्मातृका मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषि। मातृका सरस्वती देवा। गायत्री छन्दः। ह्रौं बीजानि स्वराः शक्तयः ।' क्षं' कीलकं मातृकान्यास जपे विनियोगः।

**ॐ अं ब्रह्म ऋषये नमः आं शिरसि।**

**इं गायत्री छन्दसे नमः ईं वदने।**

**उं मातृका सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये।**

**एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः नमः ऐं गुह्ये।**

**ओं स्वर शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः।**

**अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वांगेषु।**

करन्यास

**ॐ अं कं खं गं घ ङ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः।**

**ॐ इंचं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः।**

**ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः।**

**ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः।**

**ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।**

**ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

ध्यान

**पंचाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हत्पद्मवक्षः स्थलां**
**भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द्र शकलामापीन तुंगस्तनीम्।**
**मुद्रामक्ष गुणं सुधाढ्य कलशं विद्यां च हस्तांबुजै**
**र्विभ्राणां विशद प्रभां त्रिनयनां वाग्देवता तां श्रिये॥**

इसके बाद दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से अंगूठे तक के सोलह पर्वों को देखें व पूजा करें-

**ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ॠ ॠ लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः।**

फिर वाम हाथ की अंगूठे से कनिष्ठिका तक के सोलह पर्वो की पूजा करें -

**कं खं गं घं ङ** — अंगूठा बन्द करें

**चं छं जं झं जं** — तर्जनी बन्द करें

**टं ठं डं ढं णं** — मध्यमा बन्द करें

**तं थं दं धं नं** — अनामिका बन्द करें

**पं फं बं भं मं** — कनिष्ठिका बन्द करें

**यं रं लं वं** — कनिष्ठिका खोलें

**शं षं सं** — अनामिका खोलें

**हं क्षं** — मध्यमा खोलें

**त्रं** — तर्जनी खोलें

**ज्ञं** — अंगूठा खोलें

सर्वाङ्गे

**ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः** — कंठे।

**ॐ कं खं गं घं ङ चं छं जं झं ञं** — हृदये।

**ॐ टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं** — नाभौ।

**ॐ पं फं बं भं मं** — लिंगे।

**ॐ यं रं लं वं शं षं** — गुदे।

**ॐ सं हं क्षं** — भ्रुवोर्मध्ये।

ध्यान

**आधारे लिंग नाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाटे।**
**द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दश दले द्वादशार्द्धे चतुष्के।**
**वासान्ते बालमध्ये उ-फ-क-ठ सहिते कंठ देशे स्वराणां।**
**हं-क्षं-तत्वार्थ युक्तं सकल दल गतं वर्ण रूपं नमामि॥**

बहिर्मातृका न्यास

**ॐ अं नमः केशान्ते, ॐ आं नमः मुखे, ॐ इं नमः दक्षिण नेत्रे, ॐ ईं नमः वाम नेत्रे,**
**ॐ उं नमः दक्षिण कर्णे, ॐ ॐ नमः वाम कर्णे, ॐ ऋं नमः दक्षिण नासा पुटे, ॐ ॠ नमः वाम नासा पुटे, ॐ लृं नमः दक्षिण गण्डे, ॐ ॡं नमः वाम गण्डे, ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे, ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे, ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ, ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ, ॐ अं नमः मूर्ध्नि, ॐ अः नमः आस्ये, ॐ कं नमः दक्षिण बाहुमूले, ॐ खं नमः दक्षिण कूर्परे, ॐ गं नमः दक्षिण मणिबन्धे, ॐ घं नमः दक्षिण करांगुलिमूले, ॐ ङ नमः दक्षिण कराङ्गुल्यग्रे, ॐ चं नमः वाम बाहुमूले, ॐ छं नमः वाम कूर्परे, ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे, ॐ झं नमः वाम करांगुलिमूले, ॐ ञं नमः वाम कराङ्गुल्यग्रे, ॐ टं नमः दक्षिण पाद मूले, ॐ ठं नमः दक्षिण जानुनि, ॐ डं नमः दक्षिण गुल्फे, ॐ ढं नमः दक्षिण पादाङ्गुलि मूले, ॐ णं नमः दक्षिण पादाङ्गुल्यग्रे, ॐ तं नमः वाम पाद मूले, ॐ थं नमः वाम जानुनि, ॐ दं नमः वाम गुल्फे, ॐ धं नमः वाम पादाङ्गुलि मूले, ॐ नं नमः वाम पादाङ्ग्ल्यग्रे, ॐ पं नमः दक्षिण कुक्षौ, ॐ फं नमः वाम कुक्षौ, ॐ बं नमः पृष्ठे, ॐ भं नमः नाभौ, ॐ मं नमः उदरे, ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि, ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षिणांसे, ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि, ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे, ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि वामहस्ताग्रांतम्, ॐ षं मज्जात्मने नमः दक्षिण पादाग्रान्तम्, ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि पादान्तम्, ॐ हं आत्मशक्त्यात्मने नमः हृदयादि जठरे, ॐ क्षं जीवात्मने नमः नाभ्यादि हृदयान्तम्, ॐ त्रं परमात्मने नमः हृदयादि मस्तकान्तम्, ॐ ज्ञं छन्दपुरुषाय नमः शिरसि॥**

**अनेन यथाशक्त्या कृतेन भूशुद्धि, भूत शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठान्तर्मातृका बहिर्मातृका न्यासाख्य कर्मणा पंचांगुली देवी प्रीयतां न ममः ॥**

इसके पश्चात् यंत्र के मध्य में स्थित बिन्दु पर महामंत्र **'काल ज्ञान मंत्र'** को पढ़ते हुए एक सौ आठ पुष्प चढ़ावें।

काल ज्ञान मंत्र

ॐ नमो भगवते ब्रह्मानन्दपदः गोलोकादि असंख्य ब्रह्माण्ड भुवन नाथाय शशांक शंख गोक्षीर कर्पूर धवल गात्राय, नीलांभोधि जलद पटलाधिव्यक्तस्वरूपाय व्याधिकर्म निर्मूलोच्छेदन कराय, जाति जरामरण विनाशाय, संसारकान्तारोन्मूलनाय, अचिन्त्य बल पराक्रमाय, अतिप्रतिमाह चक्राय, त्रैलोक्याधीश्वराय, शब्दैके त्रैलोक्याधिनरिंवल भुवन कारकाय, सर्व सत्त्वहिताय, निजभक्ताय, अभीष्टफलप्रदाय, भक्त्याधीनाय सुरासुरेन्द्रादि मुकुटकोटि धृष्टपाद पीठाय,अनन्तयुगनाथाय,देवाधिदेवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, सर्वविद्या परमेश्वराय, कुविद्याविघ्न प्रदाय।

तत्पादपंकजाश्रयानि यवनी देवी सासन देवते त्रिभुवन संक्षोभनी, त्रैलोक्य शिवा-पहारकारिणी श्रीअद्भुत जातवेदा श्रीमहालक्ष्मी देवी(अमुकस्य)स्थावर जंगम कृत्रिम विषमुख संहारिणी सर्वाभिचार कर्मापहारिणी परविद्याछेदनी परमंत्रप्रनाशिनी अष्टमहानाग कुलो-च्चाटनी कालदंष्ट्र मृतकोत्यापिनी(अमुकस्य)सर्वरोग प्रमोचनी, ब्रह्माविष्णुरुद्रेन्द्र चन्द्रादित्यादि ग्रह नक्षत्रोत्पात मरणभय पीड़ा मर्दिनी त्रैलोक्य विश्वलोक वशंकरि, भुविलोक हितंकरि महाभैरवि भैरव शस्त्रोपधारिणि रौद्रे, रौद्ररूप धारी प्रसिद्धे, सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड़ गंधर्व किन्नर किंपुरुष दैत्योरगेन्द्र पूजिते ज्वालापात कराल दिगंतराले महावृषभ वाहिनी, खेटक कृपाण त्रिशूल शक्ति चक्रपाश शरासन शिव विराजमान षोडशार्द्ध भुजे।

एहि एहि लं ज्वालामालिनी ह्रीं ह्रीं ब्रुं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः देवान् आकर्षय आकर्षय, नाग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, यक्ष ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, गंधर्व ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, ब्रह्म ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, राक्षस ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, भूतग्रहान् आकर्षय आकर्षय, दिव्यतर ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, चतुर्विंशति जिनग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व जटिल ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, अखिल मुंडित ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, जंगम ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व दुर्गेशादि विद्याग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व नाग निग्रहवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय।

सर्व जलाशय वासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व स्थलवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्वान्तरिक्षवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व श्मशानवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व पववासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व धर्म शापादि गोशाप ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, श्रापित ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व दुष्टग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व नाथपंथी ग्रहान् आकर्षय आकर्षय, सर्व भूवासी प्रेतग्रहान् आकर्षय आकर्षय, वक्र पिंडग्रहान् आकर्षय आकर्षय, कट कट कंपय कंपय शीर्षं चालय, शीर्षं चालय, गात्रं चालय गात्रं चालय बाहुं चालय बाहुं चालय पादं

चालय पादं चालय, कर पल्लवान् चालय कर पल्लवान् चालय सर्वांगं चालय सर्वांगं चालय लोलय लोलय धुन धुन कंपय कंपय शीघ्रं भव तारय तारय ग्रहि ग्रहि ग्राह्य ग्राह्य अक्षय अक्षय आवेशय आवेशय।

ज्वलूं ज्वलूं ज्वालामालिनीं ह्लां क्लीं ब्लू द्रां द्रां ज्वल ज्वल र र र र र र र प्रज्वल प्रज्वल धग धग धूमाक्ष करणी ज्वल विशोषय विशोषय देव ग्रहान् दह दह नाग ग्रहान् दह दह यक्ष ग्रहान् दह दह गंधर्व ग्रहान् दह दह ब्रह्म ग्रहान् दह दह राक्षस ग्रहान् दह दह भूत ग्रहान् दह दह दिव्यन्तर ग्रहान् दह दह चतुराशि जैन्य मार्ग ग्रहान् दह दह चतुर्विंशति जिन ग्रहान् दह दह सर्व जटिल ग्रहान् दह दह अखिल मुंडित ग्रहान् दह दह सर्व जंगम ग्रहान् दह दह सर्व दुर्गेशादि विद्याग्रहान् दह दह सर्व नाग निग्रहवासी ग्रहान् दह दह सर्व स्थलवासी ग्रहान् दह दह सर्वान्तरिक्षवासी ग्रहान् दह दह श्मशान वासी ग्रहान् दह दह।

सर्व पवनाहार्त ग्रहान् दह दह सर्व धर्म शापादि गोशापवासी ग्रहान् दह दह सर्व गिरिगुहा दुर्गवासी ग्रहान् दह दह श्रापित ग्रहान् दह दह सर्व नाथ पंथी ग्रहान् दह दह सर्व भूवासी प्रेत ग्रहान् दह दह (अमुक गृहे) असद्गति ग्रहान् दह दह वक्रपिण्ड ग्रहान् दह दह सर्वदुष्ट ग्रहान् दह दह शतकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह दह सहस्त्रकोटि योजने दोषदायी ग्रहान् दह दह आसमुद्रात् पृथ्वी मध्ये देवभूत पिशाचादि (अमुकस्य) परिकृत दोषान् तस्य दोषान् दह दह शत्रुकृताभिचार दोषान् दह दह घे घे स्फोटय स्फोटय मारय मारय धगि धगि धागत मुखे ज्वालामालिनी ह्लां ह्रीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः सर्व ग्रहाणां हृदये दह दह पच पच छिन्दी छिन्दी भिन्दी भिन्दी दह दह हा हा स्फुट स्फुट घे घे।

क्ष्म्लु क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षौं क्षः स्तंभय स्तंभय। भ्म्लुं भ्रां भ्रीं भ्रुं भ्रें भ्रौं भ्रः बाडय बाडय। म्प्लु म्रां म्रीं म्रुं म्रें म्रौं म्रः नैत्रं स्फोटय स्फोटय दर्शय दर्शय। य्लुं यां यीं युं यें यौं यः प्रेषय प्रेषय। घ्म्लु घ्रां घ्रीं घ्रुं घ्रें घ्रौं घ्रः जठरं भेदय भेदय। ग्म्लु ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रें ग्रौं ग्रः मुखं बंधय बंधय। ख्ध्रुं खां खीं खुं खें खौं खः ग्रीवां भंजय भंजय। छप्लुं छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रें छ्रौं छ्रः अस्त्रान् भेदय भेदय। ढप्लु ढ्रां ढ्रीं ढ्रुं ढ्रें ढ्रौं ढ्रः महाविद्युत्पाषाणा स्त्रैहन स्त्रैहन। व्म्रुं व्रां व्रीं व्रुं व्रें व्रौं व्रः समुद्रे मज्जय मज्जय। द्म्रुं द्रां द्रीं द्रूं द्रें द्रौं द्रः सर्व डाकिनी सुन्दरीं मर्दय मर्दय सर्व योगिनीं सर्वज्जय सवर्जय।

सर्व शत्रून् ग्रासय ग्रासय ख ख ख ख ख ख ख खादय खादय सर्व दैत्यान् विध्वंसय विध्वंसय सर्व मृत्युं नाशय नाशय सर्वोपद्रवान् स्तंभय स्तंभय जः जः जः जः जः जः जः ज्वरान् दह दह पच पच घुमु घुमु घुरु घुरु खरु खरु खंग रावण सुविद्यायां घातय घातय अखिलरुजान् दोषोदयान् कृतकार्येणाभिचारोत्थान्(अमुकस्य)देहेस्थितान् अधुना रुजकारकान् चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय छेदय भेदय भेदय उरु उरु छरु छरु स्फुट स्फुट घे घे आं क्रौं क्षीं क्षं क्षें क्षौं क्षः ज्वालामालिनी (अमुकस्य) सौख्यं कुरु कुरु निरुजं कुरु कुरु अभिलषित कामानां देहि देहि ज्वालामालिनीं विज्ञापयते स्वाहा।

( नोट- यह काल ज्ञान मंत्र वराहमिहिर द्वारा रचित है)

यंत्र को यथास्थान रखकर इसके बाद कलशपूजा करें।

कलशपूजा

जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश रखें। फिर उसमें धान्य' डालें। उस पर नारियल रखकर रक्त वस्त्र वेष्टित करें, फिर कलश में जल (पंचनद्य) डालें। गन्ध प्रक्षेप कर सर्वोषधि डालें। पंचपल्लव' रखें। सप्तमृत्तिका डालें। पूंगीफल तथा पंचरत्न' प्रक्षेप करें। फिर दक्षिणा डालें, कुश पवित्र' प्रक्षेप करें, उस पर चावलों से भरकर पूर्ण पात्र रखें। फिर ध्यान करें -

**वरुणः पाशभृत्सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः।**
**पाश हस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान्॥**

हाथ में अक्षत लेकर कलश पर न्यौछावर करें -

**ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः । ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कलशाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ समुद्राय नमः। ॐ गंगायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ कलशकुंभाय नमः।**

फिर कलश को स्पर्श करके बोलें —

**कलशस्य मुखे विष्णुः कंठे रुद्रः समाश्रितः।**
**मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृतः।**
**कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्त द्वीपा वसुन्धरा।**
**ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वणः।**
**अंगैश्च संहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।**
**अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।**
**आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः।**

कलश प्रार्थना

**देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।**
**उत्पन्नोऽसि तदाकुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।**
**त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।**
**त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।**
**शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।**
**आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृका।**
**त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः।**
**त्वत्प्रसादादिदं कर्म कर्तुमीहे जलोद्भव।**
**सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।**

पुण्याह वाचन

कलश पूजा के पश्चात् पुण्याह वाचन करना चाहिए।

श्री गणेशाय नमः ।

अथ दानखंडोक्त पुण्याहवाचन प्रयोगः।

**संपूज्य गन्ध माल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत्।**
**धर्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामेऽद्भूतदर्शने॥**
**पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधीयते।**
**एतदेव निरोंकारं कुर्यात्क्षत्रियवैश्ययोः॥**

**अवनिकृतजानुमंडलाः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना स्वर्ण कलशं धारयित्वा दीर्घाना गानद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥**

**अपांमध्येस्थिता देवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम्।**
**ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवाआपोभवन्तु ताः ॥**
**शिवा आपः सन्तु।**
**लक्ष्मीर्वसतिपुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे।**
**सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्य तथास्तु नः ॥**
**सौमनस्यमस्तु।**
**अक्षतंचास्तुमे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम्।**
**यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम॥**
**अक्षतं चारिष्टं चास्तु।**
**ब्राह्मणानां हस्ते गन्धादि दत्त्वा।**
**गंधं प्रदयोदेवानामपत्यपुष्टिदश्च यत्।**
**गंधद्वारांदुराधर्षा मितिमंत्रेण भक्तितः ॥**
**गंधा पांतु सौ मंगल्यंचास्तु॥**
**पुष्पाणि पान्तु सौ श्रीयमस्तु॥**
**अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु।**
**तांबूलानि पांतु ऐश्वर्य मस्तु।**
**शांतिः पुष्टि स्तुष्टिश्चास्तु।**
**दक्षिणाः पांतु आरोग्यमस्तु दीर्घमायुः श्रेयः**
**श्रीर्यशोविद्याविनयो वित्तं बहुपुत्रं चारोग्यं चायुष्यं चास्तु॥**

यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहोंकारमादिकृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बह्वर्षिसंमतमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। वाच्यताम्॥ ऋक्॥

द्रविणोदाद्रविणसस्तुस्यद्रविणोदाः सनरस्यप्रियंसत्। द्रविणादा वीरवतीमिषन्नो द्रविणोदारा सते दीर्घमायुः ॥ 1 यजुः ॥

द्रविणोदाः पिपीषतिजु होतप्रचतिष्ठत।

नेष्टादृतुभिरिष्यत॥ ऋक्॥

सवितापश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्।

सविता नः सुवतु सर्वतातिसविता नोरासतांदीर्घमायुः ॥ यजुः ॥

सवितात्वा प्रसवानासुवता मग्निगृह पतीनाऽसोमोव्वनस्पती नाम्॥

बृहस्पस्पतिव्वाचऽइंद्रोज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्योव्वरुणोधर्मपतीनाम्॥ ऋक्॥

ॐ नवोनवोभवति जायमानोऽह्नांके तुरुषसामे त्वग्रम॥

भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचंद्रमास्तिरतेदीर्घमायुः ॥ यजुः ॥

ॐ नत द्रक्षाꣳ सिनपिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमजर्ठह्येतत्॥ योबिभर्तिदाक्षायण ꣳ हिरण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः समनुष्येषुकृणुते दीर्घमायुः ॥ ऋक्॥

ॐ उच्चादिविदक्षिणावन्तो अस्थुर्येअश्वदाः सहते सूर्येण॥ हिरण्यदा अमृतत्वंभजन्ते वासोदाः सोमप्रतिरन्तऽआयुः ॥ 1 यजुः ॥

उच्चातेजातमन्ध सोदि विसद्भूम्याददे॥ उग्रशर्म्ममहिश्रवः॥ इत्येताऋच॥ पुण्याहे ब्रूयात्॥ व्रतनियमतपः स्वाध्यायक्रतुदया दमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। समाहित मनसः स्मः। प्रसीदन्तु भवन्तः। प्रसन्ना स्मः अथ पूर्वस्थापितकलश ताम्रपात्रे जलमादाय यजमानमूर्धनि दूर्वया सेचनं कुर्यात्॥ शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं कर्मास्तु कर्म्म समृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अनिष्ट निरसनमस्तु॥. . . . . भूमौ॥

यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु॥पात्रे॥ यद्यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यतां तिथिकरण-मुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नसंपदस्तु तिथि करणमुहूर्तनक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयंताम्॥ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रेसग्रहेसलग्ने सदैवते प्रीयेताम् दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम्॥ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाः प्रीयंताम् इंद्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयंताम् वसिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयंताम् माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयंताम्॥

अरुन्धतीपुरोगा एकपत्यः प्रीयन्ताम् विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयंताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्ववेदाः प्रीयंताम् आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् ब्रह्मचब्राह्मणाश्चप्रीयंताम् अंबिका

सरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती कात्यायनीप्रीयंताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयंताम् ॥

भगवती ऋद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयंताम् भगवती पुष्टिकरी प्रीयंताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयंताम् भगवतौ विघ्न विनायकौ प्रीयंताम् सर्वाः कुलदेवताः प्रीयंताम् सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयंताम् सर्वाइष्टदेवताः प्रीयंताम् ॥भूमौ ॥

हताश्चब्रह्मद्विषः हताश्चपरिपंथिनः ॥ हताश्चविघ्नकर्तारः शत्रवः पराभवं यान्तु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतुपापानि शाम्यंत्वीतयः ॥ पात्रे ॥ शुभानिवर्धताशिवा आपः सन्तु शिवाऋतवः सन्तु शिवाअग्नयः सन्तु शिवाआहुतयः सन्तु शिवाओषधयः सन्तु शिवावनस्पतयः सन्तु शिवाअतिथयः सन्तु अहोरात्रे शिवेस्याताम् ॥ ऋक् ॥

शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु। शन्नोद्यावापृथिवी शंप्रजाभ्यः शन्नऐधि द्विपदे शंचतुष्पदे ॥ ॐ नि कामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥2 ॥

पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥

शुक्रांगारकबुधबृहस्पति शनैश्चरराहुकेतु सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयंताम्। भगवान्नारायणः प्रीयंताम् भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयंताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यंतदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेणयत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु पुण्याह कालान्वाचयिष्ये, वाच्यताम् ॥

ब्राह्मपुण्यमहर्यच्च सृष्टयुत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवंनित्यं तत्पुण्याहंबुवन्तु नः ॥ भो ! ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्य गृहेपुण्याहंभवंतो ब्रुवंतु ॥ 3 ॥

ॐ पुण्याहं 3 ॥ ऋक् ॥

ॐ उग्दातेवशकुनेसा मगायसि ब्रह्मपुत्रइव सवनेषुशंससि ॥ वृषेववाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुने भद्रमा वदविश्वतोनः शकुनेपुण्यमावद ॥ यजुः ॥

ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः। पुनंतुविश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥ पृथिव्यामुद्धतायांतु यत्कल्याणंपुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवंतुनः ॥

भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्यसपरिवारस्य गृहे कल्याणंभवंतोब्रुवंतु ॥ 3 ॥

ॐ कल्याणम् ॥ ऋक् ॥

ॐ अपासोपमस्ते मिन्द्रप्रयाहि कल्याणीर्जायासुरणंगृहेते ॥ यत्रारथस्यबृहतोनिधानं विमोचनंवाजिनोदक्षिणावत् ॥ यजुः ॥

ॐ यथे मां वाचंकल्याणी मावदानिजनेभ्यः ॥

ब्रह्म राजन्याभ्या ॐ शूद्रायचार्य्याय च स्वायचारणायच ॥ प्रियोदेवानांदक्षिणायै दातुरिहभूयासमयम्मेकामः समृद्ध्यतामुपमादोनमतु ॥

सागरस्यतु यात्रृद्धिंमहालक्ष्म्यादिभिः कृता। संपूर्णासुप्रभावांचतांतामृद्धिभेब्रुवंतुनः ॥

भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहेऋद्धिंभवंतोबुवंतु ॥ 3 ॥ ॐ ऋद्ध्यताम् ॥ ऋक् ॥

ॐ ऋद्ध्यामस्तोमंसनुयामवाजमानोमंत्रं स रथेहोपयातम् ॥ यशोनपक्वं मधुगोष्वंतरा भूतांशोअश्विनोः काममप्राः ॥ 1 यजुः ॥

ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम। दिवं अद्र्यारुहामाविदामदेवान्त्स्व ज्योतिः ॥

स्वस्तिस्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा। विनायकप्रियानित्यंतांतां स्वस्तिब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ममसकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहेस्वस्ति भवन्तोब्रुवंतु ॥3 ॥

ॐ स्वस्ति ॥3 ॥ ऋक् ॥

ॐ स्वस्तिऋद्धिप्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वस्त्यभियावाममेति ॥ सानो अमासोअरणेनिपातु-स्वावेशा भवतु देवगोपाः ॥ यजुः ॥

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्वदेवाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥

मृकंडसूनो रायुर्यद् ध्रुवलो मशयो स्तथा। आयुषाते नसंयुक्ताजीवेमशरदः शतम् ॥

जीवंतुभवंतः ॥ ऋक् ॥

ॐ शतं जीवशरदो वर्द्धमानः शतं हे मं ताञ्छतमुवसंतान्। शतमिंद्राग्नीसविताबृहस्पतिः शतायुषाहविषेमंपुनर्दुः ॥ यजुः ॥

ॐ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवायत्रानश्चक्रा जर संत नूनाम्।

पुत्रा सोयत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषतायुर्गतोः ॥ 2 ॥

'शिवगौरीविवाहे' या 'श्रीराम नृपात्मजे धनदस्य गृहे' या 'श्री रस्त्वकं धनदात्मजे' ॥

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुंबस्य सपरिवारस्यगृहे श्रीरस्त्वितिभवंतो ब्रुवंतु ॥

ॐ अस्तु श्रीः ॥ ऋक् ॥

ॐ श्रियेजातः श्रियआनिरीयायश्रियंव योजरितृभ्यो दधाति ॥ श्रीयंवसानाऽअमृतत्व मायन्भवंति सत्यासमिथामितद्रौ ॥ यजुः ॥

ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ॥ पशुनार्ठरूपमन्नस्यरसोयशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा ॥

प्रजापतिर्लोक पालो धाताब्रह्मासदेवराट् भगवाञ्छाश्वतो नित्यंसनोरक्षतु सर्वतः ॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयंताम् ॥ ऋक् ॥

ॐ प्रजापते नत्वदे तान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव ॥ यत्कामास्ते जुहूमस्तन्नोऽस्त्वयममुष्य पितसाव स्य पितावयंस्यामपतयो रयीणांꣳ स्वाह्य ॥

**आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानायदाशुषे॥ कृताः सर्वाशिषः संतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥ देवेन्द्रस्य यथास्वस्तितथास्वस्तिगुरो गृहे॥ एकलिंगे यथास्वस्तितथास्वस्तिसदामम॥**

**ॐ आयुष्मते स्वस्ति॥ ऋक्॥**

**ॐ स्वस्तये वायुमुपब्रवामहे सोमस्वस्ति भुवनस्ययस्पतिः॥ बृहस्पतिसर्वगणंस्वस्तये स्वस्तयआदित्यासोभवंतुनः ॥ यजुः ॥**

**ॐ प्रतिपन्थामपद्महिस्पति गामनेहसम्॥येनविश्वाः परिद्विषोवृणक्तिविन्दतेवसु॥ ऋक्॥**

**ॐ महो अग्नेसमिधानस्यशर्म्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये। श्रेष्ठे स्यामसवितुः सवीमनितद्देवानामवोअद्यावृणीमहे॥ यजुः॥**

**ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव। यद्भद्रंतन्नऽआसुव॥**

**मंत्रार्थाः सफलाः सन्तुपूर्णाः मनोरथाः।**

**शत्रूणांबुद्धिनाशोस्तुमित्राणामुदयोऽस्तवः॥**

**ऋग्वेदो ऽयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ब्रह्मवक्रेस्थितानित्यं निर्विघ्नं तव शत्रुवान्॥**

**अक्षतान्वि प्रहस्तात्तु नित्यंगृह्णन्ति ये नराः।**

**चत्वारितेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशोबलम्॥**

**श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यम्॥ धनवान्पुत्रवान्लक्ष्मीवान्भव॥**

इति दान खंडोक्तं पुण्याहवाचनं संपूर्णम्॥

पुण्याह वाचने : विप्रा —

**न तत्र कुनखी काणो हीनाङ्गोऽविकलस्तथा। बन्धाश्च विधुरो वापि क्रूरस्तु खलसेवकः। बक वृत्तिश्च दंभी च हेतुको ज्ञान दुर्बलः। एते चान्ये च विप्राः स्युर्न वाच्या स्वस्तिवाचने॥**

पुण्याह वाचन के बाद कलश में से जल लेकर यजमान अपने शरीर पर छिड़कें या ब्राह्मण यजमान का अभिषेक करें।

ततः ऽ विधुराश्चत्वारो' ब्राह्मणः कर्तुर्वामतः पत्नी : (पुत्रादि सहिता) मुपवेश्य।

मंत्र

**आपोहिष्ठात्यादि। द्यौ शान्ति० ॐ अमृताभिषेकोऽस्तु शांति शांति सुशान्तिर्भवतु।**

संकल्प

**ॐ अद्य कृतैतत्पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं च पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा शक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातु मवभत्सृजे।**

## तत्रान्तरे पञ्चांगुली कल्पम्

पञ्चाङ्गुली देवी का स्थान अपने हस्त में माना गया है, अतः इसकी उपासना हस्त नक्षत्र से ही आरंभ करनी चाहिये। कार्तिक मास के हस्त नक्षत्र से साधना प्रारंभ कर मार्गशीर्ष के हस्तनक्षत्र तक करें। एक माला प्रतिदिन करें। हवनादि कर कन्या भोजन करायें। जप शुरु करते समय पंचमेवा की दस आहुति अवश्य देवे।

हाथ की पांच अंगुलियों का प्रतीक देवी का चित्र बनाकर पट्टे पर रखें। देवी का स्थान हाथ के मध्य में है। उसके पैर हाथ की मणिबंध रेखा को स्पर्श करते हैं तथा हृदय रेखा के समीप मुखमण्डल है एव देवी का मुकुट मध्यमा अंगुली के प्रथम पौर को स्पर्श कर रही है।

देवी के आठ हाथ हैं दाहिनी ओर आशीर्वाद मुद्रा, रस्सी (पाश) खड्ग एवं तीर है तथा बायीं ओर हाथों में पुस्तक, घण्टा, त्रिशूल एवं धनुष धारण किये हुये है।

**॥ प्रथम यन्त्र रचना ॥**

यंत्र के बायी ओर-ॐ ब्राह्यै नमः , ॐ कामार्यै नमः , ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ संकायै नमः। ॐ कंकाल्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ महा- कालिन्द्यै नमः। ॐ चण्डाल्यै नमः। ॐ ज्वालापुष्यै नमः। ॐ कामाक्षायै नमः। ॐ कामाल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ अंबिकायै नमः।

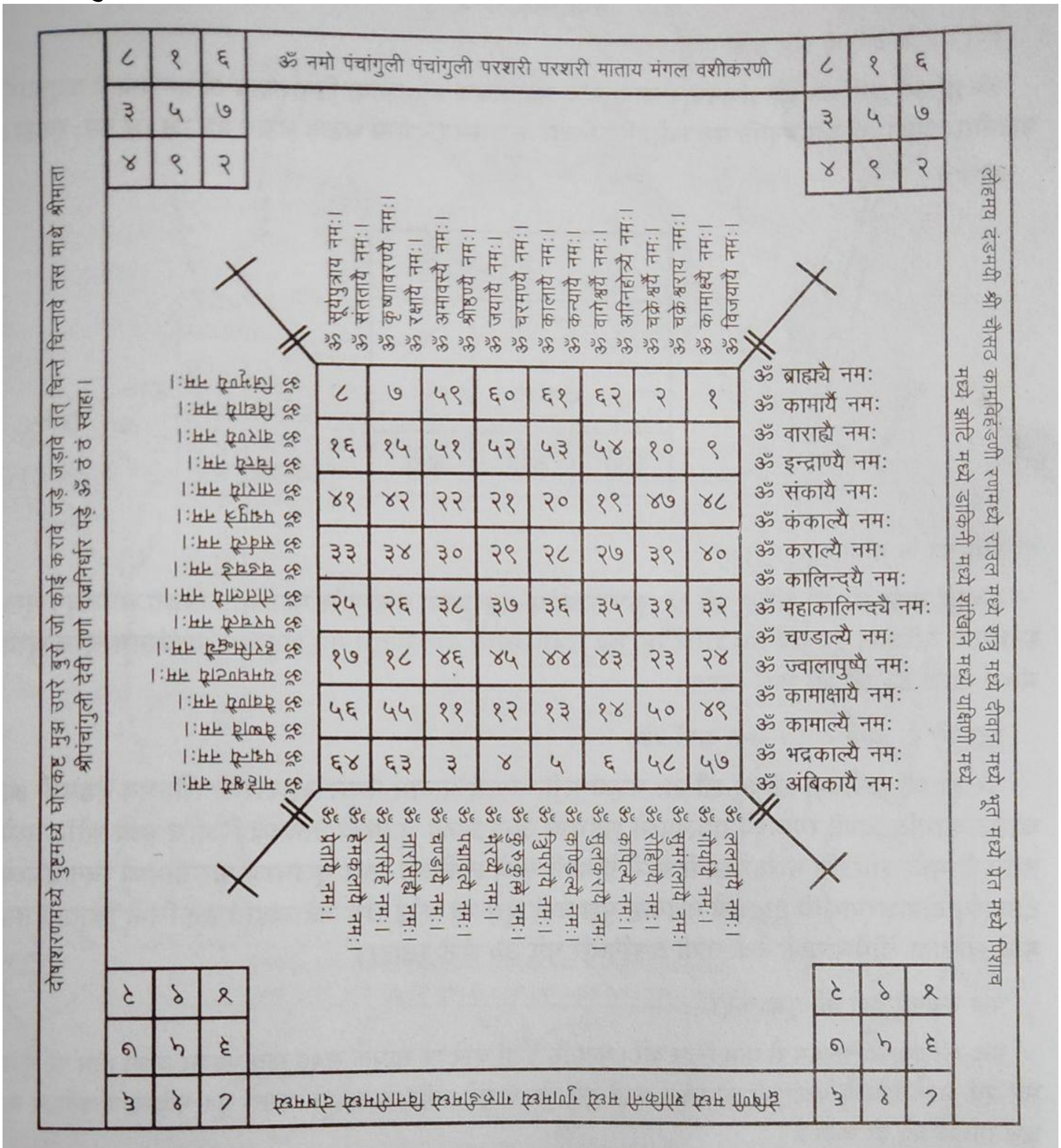
दाहिनी ओर-ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ पद्मन्यै नमः। ॐ वैष्णवे नमः। ॐ वैवाण्यै नमः। ॐ यमघण्टायै नमः। ॐ हरसिद्धयै नमः। ॐ परचत्यै नमः। ॐ तोतलायै नमः। ॐ चडचडे नमः। ॐ सर्वत्यै नमः। ॐ पद्मपुत्रे नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ चित्त्यै नमः। ॐ वारण्यै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ जिंभृण्यै नमः।

ऊपर-ॐ सूर्यपुत्राय नमः। ॐ संततायै नमः। ॐ कृष्णावरण्यै नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ अमावस्यै नमः। ॐ श्रीष्ठण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ चरमण्यै नमः। ॐ कालायै नमः। ॐ कन्यायै नमः। ॐ वागेश्वर्यै नमः। ॐ अग्निहोत्र्यै नमः। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः। ॐ चक्रेश्वराय नमः। ॐ कामाक्ष्यै नमः। ॐ विजयायै नमः।

नीचे-ॐ ललनायै नमः। ॐ गौर्यायै नमः। ॐ सुमंगलायै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ कपिल्यै नमः। ॐ सुलकरायै नमः। ॐ कण्डिल्यै नमः। ॐ त्रिपरायै नमः। ॐ कुरुकुल्ले नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ पद्मावत्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ नरसिंहे नमः। ॐ हेमकलायै नमः। ॐ प्रेतायै नमः।

चारों तरफ-ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माताय मंगल वशीकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउल मध्ये शत्रु मध्ये दीवान मध्ये भूत मध्ये प्रेत मध्ये पिशाच मध्ये झोटि मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षिणी मध्ये द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये

घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।




पञ्चांगुली पूजन यन्त्र

**अथ ध्याननम्**

**ॐ पंचांगुली महोदेवी श्री सीमन्धर शासने।**
**अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥**

**॥ द्वितीय यन्त्रः ॥**

देवी यंत्र के दाहिनी ओर ऊपर —

**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं अंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचन्द्राय पादुकाय महावीराय पंचमुखी वीर हनुमते मम शरीरारिष्ट निवारणाय मम शत्रुसैन्यं भञ्जय भञ्जय मम रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।**

बीच में -

| | | |
|---|---|---|
| यं | यं | यं |
| चं | चं | चं |
| रां | रां | रां |
| क्लीं | क्लीं | क्लीं |

देवी यंत्र के बाँयी ओर ऊपर-

**ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्षां क्षीं क्षं क्षौं क्षः कृष्णवर्णाय अष्टभुजाय पंचांगुलि महारोग हरणाय सर्वशत्रून् मुख स्तंभनाय वैरिकुल दमनाय मम शरीरे रक्ष रक्ष वज्रपिञ्जराय ममानन्दाय मम शत्रुसैन्यं विध्वंसाय चूरय चूरय मारय मारय ॐ क्षीं क्षां नमः स्वाहा।**

षट्कोण के बायीं ओर तथा दायीं ओर

**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं क्षं क्षौं क्षः पञ्चांगुली परशरी माताय मंगल वशकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाच मध्ये झोटि मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षणी मध्ये द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई रावे जडे जडावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।**



पञ्चांगुली यन्त्र

यन्त्र बनाकर देवी की पूजा करें।

मन्त्र की एक माला कम से कम नित्य करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक सुबह मन्त्र पढकर अपने हाथ पर फूंक मारे एवं अपने हाथ में पंचांगुली का ध्यान करते हुये मुंह व सारे शरीर पर घुमावे। इससे भूत भविष्य व वर्तमान का ज्ञान साधक को हो जाता है।

**॥ अन्य प्रयोग ॥**

**(क)आकर्षण -**

**ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी 'देवदत्तस्य' आकर्षय आकर्षय नमः स्वाहा।**

अष्टगंध से मन्त्र लिखे देवदत्त की जगह व्यक्ति का नाम लिखकर १०८ बार जप करें। प्रयोग शुक्ल पक्ष की अष्टमी से करें। यंत्र को बड़े बांस की भोगली के अंदर डाल देवें। ४१ दिन में आकर्षण होय।

**(ख) वशीकरण**

**ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी अमको अमुकी मम वश्यं श्रं श्रां श्रीं स्वाहा।**

इस यंत्र को वश्य वाले व्यक्ति के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल गौरोचन मूंग के पानी के साथ स्याही बनाकर लिखें। लालचन्दन का धूप जलावें, दीपक जलावें, इस यंत्र को मकान की छत या छप्पर में बांधे १३ दिन तक १०८ बार नित्य जप करें।

**(ग) विद्वेषण -**

**ॐ ह्रीं क्लीं क्षां क्षं फट् स्वाहा।**

इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र श्मशान के कोयले से लिखें श्मशान में जाग पंख, उल्लू के पंख से हवन करें। यंत्र को काले कपड़े व पत्थर से बांध कर कुवे में फेंक देवे। ४१ दिन तक १०८ बार मन्त्र जपें, उल्लू के पंख व मास की धूप देवे।

**(घ) उच्चाटन-**

**ॐ ह्रीं पंचांगुली अमुकस्य उच्चाटय उच्चाटय ॐ क्षं क्लीं घे घे स्वाहा।**

इस यंत्र को धत्तूरे के रस से लिखें। पृथ्वी पर कोयले से १०८ बार यंत्र लिखें। यंत्र को पृथ्वी में गाड़ें और उस पर अग्नि जलावें तो ७ दिन में उच्चाटन हो जाता है।

इस यंत्र को अमुकस्य की जगह अमुकबाधा लिखे तथा यंत्र विष (शंखिया, नीला थोथा) से लिखें तो प्रेत डाकिनी शाकिनी बाधा दूर होवे।

**(ङ) मारण -**

**ॐ ह्रीं ष्पां ष्पीं ष्णूं ष्पौं ष्पः मम शत्रून मारय मारय पंचांगुली देवी चूसय चूसय निराघात वज्रेन पातय पातय फट् फट् घे घे।**

इस यंत्र को श्मशान के कोयले से काले कपड़े पर लिखें। नीचे शत्रु का नाम लिखें। १०८ बार जप करें भैंसा गुगल का धूप करें। रेशमी डोरे से लपेट कर एकांत में गाड़ देवे। मदिरा की धार देवे धूप गुगल जलावें पास में बैठकर १०८ बार जप करें। शत्रु के पांव की धूल भी गुगल के साथ जलावें। कृष्णपक्ष चतुर्दशी के दिन प्रयोग करें तो शत्रु पैरों में आकर गिरे।

यंत्र को निकाल कर दूध में भिगावें। **“ॐ ह्रीं पंचांगुली रक्ष रक्ष स्वाहा”** इस मंत्र से धूप करें, १२१ बार जपे तो शत्रु को शांति मिले।

**(च) रक्षा मन्त्र -**

**ॐ ह्रीं श्रीं पंचांगुलि देवी मम शरीरे सर्वअरिष्टान् निवारणाय नमः स्वाहा ठः ठः ।**

इस मन्त्र का सवालाख जप करें। धूप देवे तो सर्वकार्य सिद्ध होवे।

———

शीघ्र फल देनेवाला पञ्चाङ्गुली शाबरमन्त्रः —

**ॐ ठं ठं ठं पञ्चाङ्गुली भूत भव्यष्यं दर्शय ठं ठं ठं स्वाहा**

(इस मन्त्रका कोई ऋषि, छन्दस्-विनियोगादि नहीं। सामान्य पूजादि नियम उपरोक्त रीतिसे जानि लेना)

## श्री पञ्चाङ्गुली दण्डकम्

श्री पंचागुंली देवी दण्डकम् ॐ ठं ठं ठं पंचागुंली भूत भविष्य दर्शय ठं ठं ठं स्वाहा॥

ॐ नमस्ते पंचागुंल्यै सर्वसिद्धिप्रदायिनि।भक्तानां कामदायिन्यै त्रैलोक्यवशकारिणि॥१॥

रक्तवर्णे महादेवि करालवदने शुभे। पञ्चास्त्रधारिणि देवि पंचगुंलि नमोऽस्तु ते॥२॥

शूलखड्गगदापाणे चापबाणधरि प्रिये। दैत्यदानवसंहन्त्रि त्राहि मां शरणागतम्॥३॥

भूतप्रेतपिशाचादि शाकिनीडाकिनीयुते। सर्वबाधाप्रशमनं कुरु देवि नमोऽस्तु ते॥४॥

मंत्रतंत्रप्रभावेण ये बाधां कुर्वते नराः। तान् नाशय महादेवि रक्ष मां भक्तवत्सले॥५॥

यः पठेन्नियतं भक्त्या दण्डकं ते महेश्वरि। तस्य सिद्धिर्भवेन्नूनं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥६॥

॥ ॐ ठं ठं ठं पंचागुंली भूत भविष्य दर्शय ठं ठं ठं स्वाहा॥

॥ इति श्री प्रभुचित्त शंकर गुरुदेव विरचित श्री पंचागुंली देवी दण्डकम् सम्पूर्णम्॥

### अथ कारागृह बन्दी मोक्ष मंत्र प्रयोगः

### ॥ बन्दी देवी प्रयोग॥

एकादशाक्षर मन्त्र - **ॐ हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः।**

अष्टादशाक्षर मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं बन्दी अमुष्य (व्यक्ति का नाम) बन्ध मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोग - **ॐ अस्य श्री बन्दी मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, बन्दी देवता, भव बन्ध कारागार बन्धन मुक्तये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास - **ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुंम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

**सतोय पाथोद समान कान्तिं अम्भोज पीयूषकरी हस्ताम्।**
**सुराङ्गना सेवित पाद पद्मां भजामि बन्दीं भवबन्ध मुक्तये॥**

॥ यंत्रार्चनम् ॥

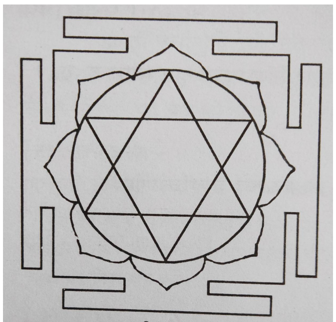
षट्कोण अष्टदल भुपूर बनायें। पश्चात् षट्कोणादि प्रत्येक आवरण की पूजा करें।

प्रथमावरणम् - (षट्कोणे)-**ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् -(अष्टदले पूर्वादि क्रमेण)-**ॐ काल्यै नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ कुब्जायै नमः। ॐ शीतलायै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ मातृकायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।**

तृतीयावरणम् - (भूपूरे दश दिक्षु) यथा पूर्वादि क्रमेण -**ॐ इन्द्राय नमः। ॐ आग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ईशान एवं पूर्व मध्ये - ॐ ब्रह्मणे नमः। नैर्ऋत्य पश्चिम मध्ये -ॐ अनंताय नमः।**

चतुर्थावरणम् (भूपुरे - इन्द्रादि लोकपाल समीपे) - **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डायै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**



बन्दीदेवी यंत्र

पश्चात् यंत्र मध्य में देवी का पूजन कर जप करें। दो लाख जप कर खीर से दशांश होम करें।

**॥ अस्य प्रयोग विधि ॥**

मालपुआ पर घी के चतुरस यंत्र बनायें। परन्तु घी से यंत्र बनाना कठिन है घी तो पिघल जायेगा ही अतः पूरा यंत्र मंत्र कल्पना के समान ही बनेगा।

अतः घी मे कलम डुबोकर यंत्र बनायें। अथवा केसर से मालपुये पर यंत्र बनायें उसके चारों ओर अठारह अक्षर का मंत्र लिखकर उसमें देवी का आवाहन करें। पूजा किया

हुआ मालपुआ जिस व्यक्ति को बन्दीगृह से छुडाना हो उसे खिलायें। बन्दी व्यक्ति देवी का स्मरण करता हुआ उसे खायें तो कारागृह से शीघ्र छूटे।

## मीनाक्षीपञ्चरत्न स्तोत्रम्

**उद्यद्भानु सहस्त्रकोटिसदृशां केयूरहारोज्ज्वलां**
**विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरां पीताम्बरालङ्कृताम्।**
**विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां तत्त्वस्वरूपां शिवां**
**मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सततमहं कारुण्यवारांनिधिम्॥१॥**

**मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभां**
**शिञ्जन्नूपुरकिङ्कणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।**
**सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेविताम्। मीनाक्षीं॥२॥**

**श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां ह्रीङ्कारमन्त्रोज्ज्वलां**
**श्रीचक्राङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं श्रीमत्सभानायिकाम्।**
**श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं श्रीमज्जगन्मोहिनीं। मीनाक्षीं॥३॥**

**श्रीमत्सुन्दरनायिकां भयहरां ज्ञानप्रदां निर्मलां**
**श्यामाभां कमलासनार्चितपदां नारायणस्यानुजाम्।**
**वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां नानाविधामम्बिकाम्। मीनाक्षीं॥४॥**

**नानायोगिमुनीन्द्रहृत्सुवसतिं नानार्थसिद्धिप्रदां**
**नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगलां नारायणेनार्चिताम्।**
**नादब्रह्ममयीं परात्परतरां नानार्थतत्त्वात्मिकां। मीनाक्षीं॥५॥**

(श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं मीनाक्षीपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्।)

## देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडाणी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि।
अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

(इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्)

## भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैवं गतिस्त्वं मतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१ ॥

भवाब्धावपारे महादुः खभीरुः पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं । गतिस्तवं ॥२ ॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं । गतिस्त्वं ॥३ ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं ॥४ ॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टि कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं । गतिस्त्वंः ॥५ ॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये । गतिस्त्वं ॥६ ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि । गतिस्त्वं ॥७ ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं ॥ गतिस्त्वं ॥८ ॥

(श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्)

